ओ३म्

पाक्षिक

# परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५८ अंक -५

महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र

मार्च ( प्रथम ) २०१६

## ऋषि बोध दिवस ( ७ मार्च )

**ऊपर की पंक्ति में बाएं से पाँचवे चौधरी चरण सिंह ( भूतपूर्व प्रधानमंत्री ) तत्कालीन प्रधान आर्य समाज, गाज़ियाबाद। नीचे की पंक्ति में दाएँ से दूसरे पंडित रामचरण शर्मा तत्कालीन मंत्री आर्य समाज, गाज़ियाबाद।**

देश में स्वराज्य की मांग जोर पकड़ रही थी। अंग्रेज भयभीत थे, इसलिए उन्होंने आदेश जारी किया कि संयुक्त प्रान्त की हर सामाजिक एवं धार्मिक संस्था नया साल 1930 मनाएं और साथ ही यह भी धमकी दी कि जो संस्था यह नया साल नहीं मनाएगी उसके सदस्यों को जेल भेज दिया जाएगा। गाजियाबाद में सभी संस्थाओं ने नया साल मनाने की तैयारी की, लेकिन आर्य समाज ने न केवल अंग्रेजों के नए साल का बहिष्कार किया, वरन् आजादी की मांग करते हुए एक 'स्वतंत्रता-ज्योति' यात्रा भी निकाली और उसका दंड सभी आर्य समाजियों को छह-छह महीने की सख्त सजा और 50-50 रुपए जुर्माना के रूप में भुगतना पड़ा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : ५
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: फाल्गुन कृष्ण, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

**सम्पादक**
प्रो. धर्मवीर

**प्रकाशक**-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

**मुद्रक**-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

**-परोपकारी का शुल्क-**

**भारत में**

**वार्षिक**-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

**विदेश में**

**वार्षिक**-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

**वैदिक पुस्तकालय :** ०१४५-२४६०१२०
**ऋषि उद्यान :** ०१४५-२६२१२७०


*लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।*

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,*
*सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।*
*संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,*
*धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।*

RNI. No. ३९५९/५९

# परोपकारी

## मार्च प्रथम २०१६

## अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| १. यह देशद्रोह है | सम्पादकीय | ०४ |
| २. कुछ तड़प-कुछ झड़प | राजेन्द्र जिज्ञासु | ०७ |
| ३. पुनरुत्थान युग का द्रष्टा | स्व. डॉ. रघुवंश | १५ |
| ४. जिनके हम ऋणी हैं - रघुनाथ.... | डॉ. धर्मवीर | २० |
| ५. क्या हम अपने ही देश में रहते हैं? | एम. वी. आर. शास्त्री | २२ |
| ६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण | | २५ |
| ७. जीवन-ग्रन्थ | रमेश मुनि | २६ |
| ८. परोपकारिणी सभा द्वारा किये जा.... | सत्येन्द्र सिंह आर्य | २७ |
| ९. वेद प्रचारार्थ मेरी केरल यात्रा | आचार्य सत्येन्द्रार्य | ३१ |
| १०. जिज्ञासा समाधान-१०६ | आचार्य सोमदेव | ३२ |
| ११. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२९ | | ३४ |
| १२. पुस्तक परिचय | आचार्य सोमदेव | ३७ |
| १३. प्रतिक्रिया | | ३८ |
| १४. संस्था-समाचार | | ३९ |
| १५. आर्यजगत् के समाचार | | ४२ |



www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com


**- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -**
**www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan**

# यह देशद्रोह है

'पाकिस्तान जिन्दाबाद, भारत के सौ टुकड़े करेंगे, किसमें रहोगे? कितने अफजल मारोगे? घर-घर से अफजल निकलेगा। भारत की बरबादी तक जंग रहेगी, जंग रहेगी। कश्मीर की आजादी लेकर रहेंगे, केरल की आजादी लेकर रहेंगे, बंगाल की आजादी लेकर रहेंगे! अफजल, हम शर्मिन्दा हैं तेरे कातिल जिन्दा हैं।' ये शब्द पाकिस्तान के किसी नगर से सुनाई पड़ते तो भी हमें उत्तेजित करने के लिये पर्याप्त होते। पाकिस्तान को कोसते, शत्रु को दण्ड देने की घोषणा करते, परन्तु ये शब्द ९ फरवरी २०१६ को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में गूँजे। विश्वविद्यालय के छात्रों ने ये नारे लगाये। एक बार नहीं, अनेक बार, इसी बात को दूरदर्शन पर कहा गया। अफजल गुरु की सजा को न्यायिक हत्या बताया गया। सर्वोच्च न्यायालय तथा संविधान की निन्दा की गई। कोई देश अपने नागरिकों द्वारा इस प्रकार के कार्य करने की कल्पना कर सकता है? यह है भारत की सहिष्णुता। इस सबको देख कर लगता है कि इन लोगों को इस देश में रहना बड़ा दु:खद लग रहा है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली, प्रारम्भ से ही अराष्ट्रीय गतिविधियों का गढ़ रहा है। उसके अन्दर देशद्रोह से लेकर नंगेपन तक सब प्रगतिशीलता और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अन्दर आ जाता है। इस विश्वविद्यालय की नींव भारत विरोध पर रखी गई है। जब यह विश्वविद्यालय बना, तब सब विभाग खुले, परन्तु संस्कृत विभाग नहीं खोला गया। भाजपा के शिक्षा मन्त्री मुरली-मनोहर जोशी ने जब इस विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग खोला, तो यहाँ के लोगों ने हड़ताल, धरने कर आन्दोलन चलाया और उसको रोकने का प्रयास किया, परन्तु केन्द्र सरकार ने विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग खोल दिया।

पिछले दिनों गोमांस के भोज का भी इस विश्वविद्यालय में आयोजन किया गया था, जिसे विद्यार्थी परिषद् और हिन्दू संगठनों के विरोध के चलते नहीं होने दिया गया। जितने देश व समाज विरोधी कार्य इस विश्वविद्यालय में होते हैं, वे सब प्रगति और स्वतन्त्रता के नाम पर किये जाते हैं। अभी तक इन गतिविधियों को प्रकाश में नहीं लाया गया, इसी कारण इस पर कार्यवाही नहीं हो पाई। सरकार भी इनकी समर्थक थी। विश्वविद्यालय के अधिकारी, असामाजिक और अराष्ट्रीय विचारों को प्रश्रय देने वाले रहे हैं। आज भी विश्वविद्यालय के अध्यापकों की ओर से जो वक्तव्य प्रसारित हुआ, यह उसी परम्परा का उदाहरण है। संदीप पात्रा ने जी न्यूज पर कहा था कि वहाँ इन अराष्ट्रीय और असामाजिक गतिविधियों का विरोध करने पर ऐसे छात्रों और अध्यापकों को दण्डित किया जाता था, उनको अपमानित करके विश्वविद्यालय से निकाल दिया जाता था।

आज जी न्यूज ने जब इस घटना को देश के सामने उजागर किया तो सारे देश में आक्रोश फैल गया। कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो अपने ही देश में अपने लोगों द्वारा शत्रुता से भी अधिक घृणित व्यवहार करे और अपने कार्य को अपना अधिकार बताये? जो लोग इस देश के पैसे से पढ़ रहे हैं, वे इस देश से द्रोह करने को अपनी अभिव्यक्ति का अधिकार बता रहे हैं। किसी भी देश का इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है? यदि चीन में इस प्रकार की घटना घटी होती तो यह ख्येनआङ्मन चौक बन गया होता। इस घटना का दूसरा पक्ष इससे भी निन्दनीय है- साम्यवादी, कांग्रेस और दूसरे राजनैतिक दल निर्लज्जता पूर्वक इन छात्रों का समर्थन कर रहे हैं। ऐसा करने वाले लोग बाहर के थे, ऐसा बहाना बना रहे हैं। इस घटना को एक सामान्य घटना कहकर अनदेखी करना चाहते हैं, तो ये लोग अभिव्यक्ति के नाम पर इसको ठीक सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं।

छात्रों द्वारा किया गया यह कार्य देशद्रोह के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जो इनके समर्थक हैं, वे भी सब देशद्रोही हैं। जो किसी भी प्रकार से देशद्रोह का समर्थन करता है, वह भी निश्चित रूप से देशद्रोही है। इस घटना का देश के सामने आना इसलिये सम्भव हो सका, क्योंकि वह सब

कैमरों में कैद है। जब न्यायालय में छात्राध्यक्ष से उसके कृत्य के बारे में स्पष्टीकरण माँगा गया तो वह कहने लगा कि मैंने ऐसा कुछ नहीं किया, बाहर के लोगों ने किया होगा। जब उसे कैमरे में नारे लगाते हुए दिखाया गया तो उसका उत्तर था कि विद्यार्थी परिषद् के लोगों ने विरोध करके वातावरण को बिगाड़ा है। क्या तर्क है! चोर को चोरी करते रोकना वातावरण बिगाड़ना होता है। इस घटना को कैमरे में देखकर भी बेशर्म नेता कह रहे हैं कि अभी पता नहीं है कि किसने ये नारे लगाये हैं, तब तक कार्यवाही करना उचित नहीं। राजनेता आज भी कह रहे हैं कि परिसर में पुलिस को नहीं जाना चाहिये। वहाँ पाकिस्तान समर्थक रह सकते हैं या पाकिस्तानी जासूस रह सकते हैं और इस देश की रक्षा में लगी पुलिस विश्वविद्यालय परिसर में नहीं जा सकती। क्या देशभक्ति है इन लोगों की!

इस अवसर पर हम एक बात भूल रहे हैं। यह घटना पहली नहीं, यह कार्य शृंखलाबद्ध रूप से किया जा रहा है। यही कार्य हैदराबाद विश्वविद्यालय में इसी प्रकार हुआ था, परन्तु उसकी कैमरा प्रति नहीं थी, इस कारण उस घटना को दलित वर्ग से जोड़कर शोर मचाया गया। वहाँ भी यही सब कुछ हुआ था, जो दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हो रहा है। हैदराबाद विश्वविद्यालय में इसी प्रकार तीन सौ से अधिक लोगों ने इकट्ठे होकर याकूब मेमन की फाँसी की सजा का विरोध किया था। वहाँ छाती पीटकर रोया गया। याकूब मेमन की आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की गई। वहाँ पर भी एक याकूब की जगह घर-घर याकूब पैदा होने की बात की गई थी। जब विद्यार्थी परिषद् के एक छात्र ने इन कार्यक्रमों का विरोध किया, उसने फेसबुक पर इस कार्य की निन्दा की, इसे गलत बताया, तब याकूब समर्थकों ने तीस से अधिक संख्या में इकट्ठे होकर आधी रात को उस युवक के कमरे पर जाकर उसे पीटा और इतना पीटा कि अधमरा कर दिया। उस छात्र को दरवाजे पर लाकर उससे बलपूर्वक क्षमा याचना लिखवाई और जो उसने लिखा था, उसी से उस लेख को हटवाया गया। क्या यह सहिष्णुता है? क्या यह अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता है? क्या यह सामाजिक न्याय है? आप गलत भी करें तो वह अभिव्यक्ति की आजादी है और दूसरा विरोध करे तो आप उसे जान से मार देंगे? विश्वविद्यालय की इस घटना से दुःखी होकर छात्र की माँ ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया तो हैदराबाद विश्वविद्यालय के छात्रों ने हड़ताल कर दी, इसी बीच रोहित ने आत्महत्या कर ली। बस, राजनेताओं और देशद्रोही लोगों ने उसे मोदी सरकार के विरुद्ध दलितों पर अत्याचार का मुद्दा बना दिया। राहुल गाँधी और केजरीवाल जैसे लोग सहानुभूति दिखाने दौड़े चले गये, आज तक चीख-चिल्ला रहे हैं। वास्तविक घटना पर ध्यान नहीं देना चाहते और कोई राहुल-केजरीवाल विश्वविद्यालय में छात्रों को समझाने नहीं गया। उनके कार्यों की किसी ने निन्दा नहीं की।

दिल्ली की घटना हैदराबाद की घटना की अगली कड़ी है। वहाँ की घटनाओं को रोकने के लिये ही छात्र ने केन्द्र सरकार को लिखा था। केन्द्र सरकार का कार्य नितान्त उचित व देश और समाज के हित में था, परन्तु भारत तो जयचन्दों का देश है। आज कांग्रेस और पूरा विपक्ष केवल एक कार्य में लगा है। वह हर कार्य को, घटना को मोदी-विरोध के रूप में काम में लाना चाहता है। दिल्ली में ही दूसरी घटना घटी। अफजल गुरु और मेमन के चित्र के पत्रक छापकर उनकी फाँसी की निन्दा की गई। इस कार्य को बुद्धिजीवियों के प्रमुख स्थान प्रेस क्लब ऑफ इण्डिया में किया गया। इस सम्मेलन के आयोजन में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक भी सम्मिलित हैं। क्या सरकारी स्थानों पर देशद्रोह के कार्यों को सार्वजनिक रूप से किसी देश में करने की कोई कल्पना कर सकता है?

यहाँ ऐसा क्यों हो सकता है? क्योंकि हमारी सरकार में शत्रु देश के समर्थक लोग रहते रहे हैं। नेहरू से सोनिया तक की सरकारों का इस देश की संस्कृति का विरोध और नाश करना ही उद्देश्य रहा, इस कारण इस देश की जनता में देश और संस्कृति के प्रति गौरव का भाव जन्म नहीं ले सका। हमारी नई पीढ़ी में हमारी बातों को पुराना, पिछड़ा और दकियानूसी मानने की परम्परा बन गई है। यहाँ की संस्कृति, भाषा और सभ्यता को नष्ट करने के लिये विदेशी आचार-विचार को आदर्श बनाकर प्रस्तुत किया गया, जिसका जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय उदाहरण है। इसी कारण देश में देश-विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा

मिला। राजनीति में सत्ता के लालच में तुष्टीकरण का उपयोग इतना हुआ कि देश-विरोधी कार्यों को अनदेखा किया गया। आज की घटना उसी का परिणाम है। आज जो कुछ हुआ और उसकी प्रतिक्रिया में जो हो रहा है, वह केवल जागरूकता के कारण हो रहा है। विश्वविद्यालय में छात्र परिषद के द्वारा विरोध किया जाना तथा जी न्यूज द्वारा इसको दृढ़तापूर्वक उजागर करना, जिसके चलते समाज में चेतना आ गई और देशद्रोहियों पर न्यायालय की कार्यवाही सम्भव हो पाई। देशद्रोह में लिप्त लोग कोई बलवान नहीं हैं। वे तो कार्यवाही प्रारम्भ होते ही छिपने के लिये भाग गये, अभी तक तो केवल एक ही पकड़ में आया है, जैसे ही दस-बीस पर न्यायालय की कार्यवाही होगी, ये सब छिपते दिखाई देंगे।

जनता में कोई पाकिस्तान जिन्दाबाद कहे, अफजल गुरु जिन्दाबाद कहे, इनके चित्र लगाये, इनका गुणगान करे, वह देशद्रोही है। कोई पाकिस्तान जिन्दाबाद कहता है या खालिस्तान जिन्दाबाद का नारा लगाता है, भिण्डराँवाले का चित्र लगाता है, भिण्डराँवाला जिन्दाबाद का नारा लगाता है, ये सब देशद्रोही हैं। इनकी सहायता करने वाले, इनका समर्थन करने वाले, सभी देशद्रोही हैं- चाहे कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गाँधी हो या आप पार्टी के अरविन्द केजरीवाल हो, अथवा कम्यूनिस्ट नेता सीताराम येचूरी व डी. राजा। देशद्रोह का अपराध किसी भी परिस्थिति में क्षम्य नहीं है। इनको योग्य दण्ड दिया गया तो आगे इस प्रकार की गतिविधियों पर अंकुश लग सकता है। सरकार के साथ-साथ समाज को भी आज की तरह जागरूक होना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के वे छात्र जिन्होंने देशद्रोहियों का विरोध किया तथा जी न्यूज बधाई के पात्र हैं।

शास्त्र देशद्रोहियों को कठोर दण्ड देने का आदेश देता है-

**यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा:।**
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत् साधुपश्यति।।

**- धर्मवीर**

## श्रद्धा सुमन

दिल्ली सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी बलदेव जी महाराज का महाप्रयाण क्या हुआ, मानो २८ जनवरी २०१६ को सूर्य एक बार फिर निस्तेज हो गया। रात भर बरसी हुई ओस उस प्रात:काल की बेला में मानो रात्रि के नि:शब्द आँसुओं की गाथा कह रही थी।

२८ जनवरी का दिन फरीदाबाद के लिए महात्मा कन्हैयालाल महता का 'स्मृति दिवस' होता है, जिसे 'प्रेरणा दिवस' के रूप में समर्पित किया जाता है। उन्हें 'महात्मा' की उपाधि भी स्वामी बलदेव जी महाराज द्वारा इस मंच से ही विभूषित की गई थी।

अपने अभिन्न मित्र के प्रति उनके हृदय में अपार स्नेह था। वह वर्षभर मानो इस विशेष दिन की प्रतीक्षा करते, यहाँ आते और भाव-विभोर होकर अपने उद्गार व्यक्त करते। पिछले दो वर्षों से अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण वे उपस्थित नहीं हो पाए, पर सशरीर न होते हुए भी मन से यहीं रहते।

कैसा विचित्र संयोग कि अपनी देह से मुक्त होने का दिन भी नियति ने उन्हें वही दिया, जो काल की क्रूर दृष्टि ने उनके मित्र महता जी को दिया था। परमपिता परमात्मा ने दो पवित्र आत्माओं को पुन: एक साथ कर दिया।

उनका जाना, शोक का कारण नहीं हो सकता, क्योंकि वे आजीवन 'विदेही' रहे। उनके दिखाए गए आदर्श, उनके आर्य मूल्य पूरे आर्य समाज की अतुलनीय सम्पदा है और यदि उस धरोहर की हम समुचित रक्षा कर सकें, उसका विकास कर सकें तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

**- डॉ. विमल महता, प्रधाना, आर्य समाज नेहरू ग्राम, आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद**

---

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०**

# कुछ तड़प-कुछ झड़प

**- राजेन्द्र जिज्ञासु**

**ऋषि जीवन-विचार:-** आर्य समाज के संगठन की तो गत कई वर्षों में बहुत हानि हुई है-इसमें कुछ भी सन्देह नहीं हैं। कहीं भी चार-छ: व्यक्ति अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये मिलकर एक प्रान्तीय सभा या नई सार्वदेशिक सभा बनाने की घोषणा करके विनाश लीला आरम्भ कर देते हैं। इसके विपरीत ऋषि मिशन के प्रेमियों ने करवट बदलकर समाज के लिए एक शुभ लक्षण का संकेत दिया है। वैदिक धर्म पर कहीं भी वार हो, देश-विदेश के भाई-बहिन झट से परोपकारिणी सभा से सम्पर्क करके उत्तर देने की माँग करते हैं। सभा ने कभी किसी आर्य बन्धु को निराश नहीं किया। पिछले १५-२० वर्षों के परोपकारी के अंकों का अवलोकन करने से यह पता लग जाता है कि परोपकारी एक धर्मयोद्धा के रूप में प्रत्येक वार-प्रहार का निरन्तर उत्तर देता आ रहा है।

नंगल टाउनशिप से डॉ. सरदाना जी ने, जंडयाला गुरु आर्यसमाज के मन्त्री जी ने सभा से सम्पर्क करके फिर इस सेवक को सूचना दी कि एक व्यक्ति ने फेसबुक पर ज्ञानी दित्तसिंह के ऋषि दयानन्द से दो शास्त्रार्थों का ढोल पीटा है। जब सभा के विद्वानों ने पंजाब की यात्रा की थी, तब जालंधर मॉडल टाऊन समाज में भी डॉ. धर्मवीर जी के सामने ज्ञानी दित्तसिंह के एक ट्रैक्ट में ऋषि से तीन शास्त्रार्थों का उत्तर देने की माँग की थी। मैं साथ ही था। मैंने तत्काल कहा कि परोपकारी में उस पुस्तक का प्रतिवाद दो-तीन बार किया जा चुका है। लक्ष्मण जी वाले जीवन चरित्र के पृष्ठ २६८,२६९ को देखें। यह दित्तसिंह की पुस्तक का छाया चित्र है। इसमें वह स्वयं को वेदान्ती लिखता है। वह सिख नहीं था। उस ट्रैक्ट में किसी सिख गुरु का नाम तक नहीं, न कोई गुरु ग्रन्थ का वचन है।

ऋषि से शास्त्रार्थ की सारी कहानी ही कल्पित है। तत्कालीन किसी ऋषि विरोधी ने भी दित्तसिंह से ऋषि के शास्त्रार्थ की किसी पुस्तक व पत्रिका में चर्चा नहीं की। भाई जवाहरसिंह ने ऋषि के बलिदान के पश्चात् आर्य समाज को छोड़ा। उसने भी दित्तसिंह ज्ञानी के शास्त्रार्थ का कभी कहीं उल्लेख नहीं किया। शेष आमने-सामने बैठकर जो पूछना चाहेंगे उनको और बता देंगे।

**ऋषि की Height ऊँचाई:-** हमें पहले ही पता था कि इतिहास प्रदूषण का उत्तर तो किसी से बन नहीं पड़ेगा। एक-एक बात का उसमें प्रमाण दिया गया है। विरोधी विरोध के लिए मेरे साहित्य में से इतिहास की कोई चूक खोज कर उछालेंगे। मैं तो वैसे ही भूल-चूक सुझाने पर उसके सुधार करने का साहस रखता हूँ। इसमें विवाद व झगड़े का प्रश्न ही क्या है। पता चला कि कुछ भाई ऋषि की Height ऊँचाई का प्रश्न उठायेंगे। फिर पता नहीं, पीछे क्यों हट गये। मैंने निश्चय ही ऋषि को एक लम्बा व्यक्ति लिखा है। ग्रन्थ में यत्र-तत्र इसके प्रमाण भी दिये हैं। आक्षेप करने वाले ऋषि की खड़ाऊँ के आधार पर उनका कद बहुत बड़ा नहीं मानते। प्रश्न जब पहुँच ही गया है, तो एक प्रमाण यहाँ दे देता हूँ।

लाहौर में एक पादरी फोरमैन थे। वह लाहौर में बहुत ऊँचे व्यक्ति माने जाते थे। एक दिन डॉ. रहीम खाँ जी की कोठी से ऋषि जी समाज में व्याख्यान देने जा रहे थे। उनका ध्यान सामने से आ रहे पादरी फोरमैन पर नहीं गया। **पादरी ने ऋषि का अभिवादन किया तो साथ वालों ने उन्हें कहा कि सामने देखो, पादरी जी आपका अभिवादन करते आ रहे हैं। जब पादरी जी पास आये तो मेहता राधाकिशन ( ऋषि के जीवनी लेखक ) ने देखा कि पादरी जी ऋषि के कंधों तक थे। अब विरोधी का जी चाहे तो मुझे कोस लें।** मैं इतिहास को, तथ्यों को और सच्चाई को बदलने वाला कौन? मैं हटावट, मिलावट, बनावट करके मनगढ़न्त हदीसें नहीं गढ़ सकता। ऋषि जी ने स्वयं एक बार अपनी ऊँचाई की चर्चा की थी। वह प्रमाण हमारे विद्वानों की पकड़ में नहीं आया। ऋषि-जीवन की चर्चा करने वालों को वह भी बता दूँगा। प्रमाण बहुत हैं। चिन्ता मत करें।

**दिल्ली के वे दीवाने धर्मवीर:-** कुछ पाठकों की प्रेरणा से छोटे-छोटे दो-तीन प्रेरक प्रसंग दिल्ली के इतिहास

से देता हूँ। याद रखिये, सिलाई स्कूल, बारात घर, होम्योपैथी डिस्पैन्सरी यह आर्य समाज का इतिहास नहीं। यह कार्य तो रोटरी क्लब भी करते हैं। स्वामी चिदानन्द जी पर दिल्ली में शुद्धि के लिए अभियोग चला। वे जेल गये। यातनायें सहीं। मौत की धमकियाँ मिलती रहीं। कभी दिल्ली में किसी ने उनकी चर्चा की?

दिल्ली में दो स्वामी धर्मानन्द हुए हैं। मेरा उपहास उड़ाया गया कि कौन था धर्मानन्द स्वामी? अरे भाई दिल्ली वालों! आप नहीं जानते तो लड़ते क्यों हो? पं. ओ३म् प्रकाश जी वर्मा, डॉ. वेदपाल जी, श्री विरजानन्द से पूछ लो कि करोल बाग समाज वाले कर्मवीर संन्यासी धर्मानन्द कौन थे। दिल्ली के पहले मुख्यमंत्री चौ. ब्रह्मप्रकाश ने दिग्विजय जी वाला काम कर दिया। बुढ़ापे में शादी रचा ली। सब लीडर बधाइयाँ दे रहे थे। हमारे स्वामी धर्मानन्द जी पुराने स्वतन्त्रता सेनानी थे। यह उनके घर जाकर लताड़ लगा आये कि यह क्या सूझा?

दिल्ली के पहले आर्य पुस्तक विक्रेता का नाम दिल्ली में कौन जानता है? वह थे श्री दुर्गाप्रसाद जी। पं. लेखराम ला. बनवारीलाल करनाल वालों के संग एक ग्रन्थ की खोज करने निकले। प्रातः से रात तक सारी दिल्ली की दुकानें छान मारीं। आर्य जाति की रक्षा के लिए एक पुस्तक में उसका प्रमाण देना था। अँधेरा होते-होते उन्हें वह ग्रन्थ मिल गया। कुछ और ग्रन्थ भी क्रय कर लिये। पुस्तक विक्रेता थे श्री दुर्गाप्रसाद जी आर्य। वह ताड़ गये कि यह ग्रन्थ तो कोई गवेषक स्कालर ही लेता है। यह ग्राहक कौन है?

पं. लेखराम जी भी दुकानदार को कभी मिले नहीं थे। पन्द्रह रुपये माँग तो लिए फिर पूछा, ''अरे भाई आप हो कौन?'' साथी ला. बनवारी लाल बोले, ''आप नहीं जानते? यह हैं जातिरक्षक आर्य पथिक पं. लेखराम जी।'' अब दुर्गाप्रसादजी ने कहा, ''इनसे मैं इनका मूल्य नहीं लूँगा।'' पं. लेखराम अड़ गये कि ''मैं यह राशि दूँगा और अवश्य दूँगा।'' मित्रों! तब रुपया हाथी के पैर जितना बड़ा होता था। पण्डित जी की मासिक दक्षिणा मात्र ३०-३५ रुपये थे। धर्मवीर पं. लेखराम तो धन्य थे ही, कर्मवीर दुर्गाप्रसाद के धर्मानुराग का भी तो कोई मूल्याङ्कन करें।

**शैतानी किसने कर दी?:-** एक बार कादियाँ (पंजाब) में अल्लाह मियाँ पहुँचा था। कादियाँ के नबी मिर्जा गुलाम अहमद के मरने पर अल्लाह शोक मनाने (पंजाब में मकानी बोलते हैं) आया था। यह नबी ने आप लिखा है। तब कादियाँ वालों को अल्लाह के आने का पता तक न चला। मैं कॉलेज का विद्यार्थी था। आर्य सभासदों के चन्दे मैं ही लाकर कोषाध्यक्ष को दिया करता था। जब ला. दाताराम का चन्दा लेने जाता था, तब उनके बहुत वृद्ध पिताजी ला. मलावामल की बैठकर बातें सुनने लग जाता था। आप मिर्जा के संगी साथी थे। आपने कभी अल्लाह के कादियाँ में आने की बात की पुष्टि नहीं की थी। आपने तब उसे देखा ही नहीं था तो पुष्टि क्या करते?

टी.वी. देखते-देखते जब हज की दुर्घटना का दुखद दृश्य देखा तो अल्लाह के कादियाँ आने की घटना याद आ गई। इतने भोले-भाले हज यात्री स्त्रियाँ और वृद्ध मारे गये। दृश्य देखा नहीं गया। जैसे भारत में हिन्दू मन्दिरों व तीर्थों में भगदड़ मचने से आबाल वृद्ध मारे कुचले जाते हैं, वही कुछ वहाँ हुआ। परम्परा से एक स्थान विशेष पर हाजी शैतान को पत्थर मारकर हज के कर्मकाण्ड को पूरा करते हैं। अंधविश्वास हिन्दू मुसलमान सब में फैले हुए हैं।

मक्का को मुसलमान 'बैत अल्लाह' (अल्लाह का घर) मानते हैं। अल्लाह के पास फरिश्तों की भारी सेना है-यह कुरान बताता है। न जाने फिर शैतान अल्लाह के घर में कैसे घुस जाता है? भगदड़ मचने का कारण क्या था? शैतानी वहाँ शैतान ने तो की नहीं। कहा जाता है कि किसी हाजी ने ही शैतानी की। अब वहाँ की सरकार यह जाँच करेगी कि शैतानी की किसने? शैतान को तो किसी ने वहाँ कभी देखा ही नहीं। जिसे अल्लाह इतने लम्बे समय से नहीं पकड़ पाया, उसका इन कंकरों से क्या बिगड़ेगा? हमारी हितकारी सीख बहुत कुछ तो मुसलमानों ने मान ली है, परन्तु जन-जन तक नहीं पहुँचाई। हम क्या कर सकते हैं?

शैतान विषयक हमारा न सही, सर सैयद की सीख ही सुन लेते तो इतने अभागे हाजी न मरते। सर सैयद ने लिखा है, ''एक मौलाना ने सपने में शैतान को देख लिया। झट से कसकर एक हाथ से उसकी दाढ़ी पकड़कर खींची। दूसरे हाथ से शैतान के गाल पर पूरी शक्ति से थप्पड़ मारा।

शैतान का गाल लाल-लाल हो गया। इतने में मौलाना की नींद टूट गई। देखा तो उसके हाथ में उसी की दाढ़ी थी और वह लाल-लाल गाल जिस पर थप्पड़ मारा गया था, वह भी मियाँ जी का अपना ही गाल था। सो पता चल गया कि शैतान कहीं बाहर नहीं है। आपके भीतर के आपके दुरित, दुर्गुण ही हैं।'' आशा है इतनी बड़ी दुर्घटना से सब शिक्षा लेंगे।

**हटावट का उदाहरण माँगा गया है:-** इतिहास में मिलावाट की तो बहुत चर्चा होती है। मैंने इतिहास प्रदूषण में स्वामी वेदानन्द जी की साक्षी से हटावट व बनावट की भी चर्चा की है। एक विचारशील पाठक ने हटावट का प्रबल प्रमाण या उदाहरण माँगा है। लीजिये, सबके भले के लिए इसे परोपकारी में देते हैं। मैं केवल स्वाध्याय ही नहीं करता, वर्षों से अजमेर में ऋषि मेला पर (बिन बुलाये भी) आ रहा हूँ। परोपकारिणी सभा के सब सदस्यों, अधिकारियों को बहुत निकट से देखा है। परोपकारिणी सभा के सामने सरकार के गुप्तचर राय बहादुर मूलराज के एक भाषण के कारण 'माँस भक्षण' का प्रश्न आया। दिसम्बर १८९३ के सभा के अधिवेशन में मांसाहार का प्रश्न आया। सभा ने निर्णय लेने से पूर्व देश भर की सब समाजों की सम्मतियाँ इकट्ठी कीं। केवल एक समाज ने मांसाहार के पक्ष में अपनी सम्मति भेजी। यह था कर्नल प्रताप सिंह का जोधपुर का समाज।

परोपकारिणी सभा के इतिहास पर बढ़-चढ़कर लिखने व बोलने वाले किसी व्यक्ति ने, प्रतापसिंह-विशेषज्ञ किसी भी लेखक ने आज तक इस महत्त्वपूर्ण घटना का लेखनी व वाणी से कभी वर्णन नहीं किया। **इस कुकृत्य को स्वामी वेदानन्द जी हटावट कहा करते थे।** आर्य समाज के इतिहास में कोई एक हटावट नहीं हुई। ईश्वर कृपा से समय मिला तो हटावट पर भी एक पुस्तक लिख दी जायेगी।

**श्री राहुल जी को पाकर समाज धन्य हो गया:-** गुरुदत्त भवन लाहौर का पुस्तकालय हमारे हाथ से गया। यह अपूरणीय क्षति थी। परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय से तो महाराणा सज्जन सिंह जी द्वारा सर नाहरसिंह जी को भेंट की गई सत्यार्थ प्रकाश की ऐतिहासिक प्रति (जिसे मैंने भी कभी देखा था) भी एक तस्कर ले गया। जब मुझे उसकी आवश्यकता पड़ी, तब सभा को इस चोरी का पता चला। अकोला के श्री राहुल आर्य ने मेरे शोध कार्य में सहयोग करने के लिए अपनी सेवायें भेंट की तो मैंने जो-जो कार्य सौंपे, लगभग वे सब कार्य इस परमोत्साही युवक ने चमत्कारी ढंग से सिरे चढ़ाकर आर्य समाज का सिर ऊँचा कर दिया। सैकड़ों दुर्लभ ग्रन्थ, बीसियों पत्र-पत्रिकायें और सहस्रों अंक तथा लाखों पृष्ठ पं. लेखराम का यह मानस पुत्र खोज लाया। क्या-क्या बताऊँ? बस संकेत ही देता हूँ। अगले लेखों में व मेरे आने वाले ग्रन्थों में ऋषि सन्तान को सब पता चल जायेगा। राहुल ने कितना धन इस कार्य पर फूँका होगा, यह उसके आर्य समाजी पिता-माता को भी पता नहीं होगा। जिन-जिन दुर्लभ स्रोतों का मैंने उपयोग प्रयोग कर लिया, वे सब अजमेर सभा को सौंप दिये हैं।

जानकारी के लिए कुछ ग्रन्थों व पत्रिकाओं का उल्लेख करता हूँ। पं. श्रद्धाराम के चेले भी उसकी सब कृतियों का नाम नहीं जानते । उसने पंजाब के अंग्रेज गवर्नर की प्रेरणा से फारसी के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'दबिस्ताने मजाहब' का उर्दू अनुवाद कर दिया। उसने ब्राह्म समाजी नवीन चन्द्र राय तथा मुंशी कन्हैयालाल के विरुद्ध तो एक -एक पुस्तक लिखी, परन्तु ऋषि दयानन्द के विरुद्ध एक भी ट्रैक्ट न लिखा। 'इतिहास की साक्षी' में मैंने इसका कारण बता दिया है। सन् १८५७ के विप्लव के पश्चात् पटियाला के आर्यों पर चलाये गये राजद्रोह के प्रथम अभियोग की विस्तृत जानकारी एक पत्रिका की फाईल से अब दी जायेगी। उस युग के सब सुधारक व धार्मिक नेता अंग्रेज सरकार से जुड़े रहे, सरकार की सेवा में रहे। सबको १८५७ के विप्लव पर ग्रन्थ लिखने पड़ गये। इन नेताओं में कन्हैयालाल अलखधारी भी थे। केवल मेरे ऋषि ने उसे विप्लव माना। कभी गदर या द्रोह नहीं लिखा व कहा। इन ग्रन्थों को राहुल जी ने मेरे पास पहुँचा दिया है। मेरे प्यारे ऋषि की ऊँचाई व महानता को संसार और गहराई से जानेगा। राहुल को जन्म देकर उसके माता-पिता भी धन्य-धन्य हो गये। आर्य समाज तो धन्य हुआ ही है। परोपकारिणी सभा की शान को चार चाँद लग गये हैं। पिछली आयु में

सेवा के नये-नये अवसर व सौभाग्य प्राप्त करके इस छोटे से ऋषि भक्त का जन्म व जीवन भी सार्थक हो गया।

**जर्मनी से वेद मँगवाये?:-** कई एक आर्यवीरों ने माननीय सोमदेव जी से व मुझसे यह महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछा है-क्या ऋषि ने जर्मनी से वेद मँगवाये? भारत से गुरु विरजानन्द जी से वेद का ज्ञान व वेद संहिताएँ कुछ भी न मिले? अभी संक्षेप से निवेदन है कि १. ऋषि को यजुर्वेद का ज्ञान तो घर पर ही करवाया गया था। २. आर्य समाज की स्थापना से बहुत पहले पश्चिम में व भारत में भी पत्रों में ऋषि के अथाह वेद ज्ञान की धूम मच गई थी। ऐसे Document (दस्तावेज) राहुल जी ने खोज कर हमें सौंप दिये हैं। ३. राजकोट में प्राचार्य मैकनाटन ने ऋषि जी को ऋग्वेद की दो प्रतियाँ अवश्य भेंट की। ऋषि जीवन के पहले भाग के पृष्ठ ४०६ पर इसका वर्णन है। ४. परोपकारिणी सभा के पुस्तकालय में मैक्समूलर द्वारा प्रकाशित ऋग्वेद की एक प्रति अवश्य है। ५. ऋषि के पत्र-व्यवहार में जर्मनी से वेद मँगवाने के लिए लिखा गया कोई पत्र पाठक ऋषि के पत्र-व्यवहार में देखने का पुरुषार्थ करके देख ले। ६. सन् १९५२ में दिल्ली के दीवान हाल समाज में एक माता ने भावुकता से यह गीत गाया था-

**वेद जर्मन से मँगाये थे ऋषि ने आनकर**

तथ्य इस कथन की पुष्टि नहीं करते। विस्तार से फिर लिखेंगे।

**ऋषि-जीवन शिविर:-** ऋषि के प्रेरणाप्रद, गौरवपूर्ण और विलक्षण इतिहास के ज्ञान को फैलाने के लिए परोपकारिणी सभा अजमेर में प्रतिवर्ष आठ दिन का ऋषि-जीवन चिन्तन शिविर आयोजित किया करे। यह करणीय कार्य है। प्रश्न पूछने वाले सभा मन्त्री जी को अपने-अपने प्रश्न शंकायें पहले से लिखकर भेज दिया करें। टंकारा आदि गुरुकुल भी इसमें भाग लेना चाहें तो उनका स्वागत किया जावे। ऋषि-जीवन के अधिकारी विद्वान् इस शिविर में स्मारक व्याख्यान भी दें और शंका समाधान भी करें। इस करणीय कार्य की उपेक्षा से हानि जो होगी, उसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। इस समय यह कार्य परोपकारिणी सभा ही कर सकती है।

**हदीसों को बस हदीस ही समझें:-** दो-तीन पाठकों ने ऋषि दयानन्द जी व आर्य समाज की हिन्दी को देन पर छपे एक लेख के बारे में कई प्रश्न पूछे हैं। मैं हदीसें गढ़ने वालों की कल्पनाशक्ति का तो प्रशंसक हूँ, परन्तु उनके फतवों पर कुछ नहीं कह सकता। गप्प तो गप्प ही होती है।१. स्वामी श्रद्धानन्द जी ने रात-रात में 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू साप्ताहिक को हिन्दी में कर दिया। यह सुनने-सुनाने में तो अच्छा लगता है, वैसे यह एक मनगढन्त कहानी है। सद्धर्म प्रचारक के अन्तिम महीनों के अंक इस गप्प की पोल खोलते हैं। आर्य समाचार मेरठ एक उर्दू मासिक था। इसके मुखपृष्ठ पर इसका नाम तो हिन्दी में भी छपता था। इसको हिन्दी का पत्र बताने वाले खोजी लेखक इसका एक अंक दिखायें। आर्य दर्पण मासिक भी द्विभाषी पत्र था। हिन्दी व उर्दू दो भाषाओं में होता था। उसे हिन्दी मासिक लिखना आंशिक सच है। मैंने इसके त्रिभाषी अंक भी देखे हैं। आर्य समाज के सदस्यों ने हिन्दी में लाखों पुस्तकें लिख दीं। इस पर तो टिप्पणी करना भी उचित नहीं। मिर्जा कादियानी भी ऐसे ही सैंकड़ों, सहस्रों की नहीं, लाखों की घोषणायें किया करता था। भगवान आर्य समाज को ऐसी रिसर्च व ऐसे खोजियों से बचावे । इससे अधिक इन प्रश्नों का उत्तर क्या दिया जावे?

**रोगी हिन्दू समाज के ये डाक्टर:-** एक बार महाराष्ट्र सभा के आदेश पर मैं धूले गाँव गया। प्रातः समय समाचार पत्र विक्रेता एक युवक से आर्य समाज मन्दिर का अता-पता पूछा। उसने कहा, ''वह कौनसे भगवान् का मन्दिर है?'' मैंने उसे कहा-''तू अपने नगर के भगवानों की सूची दिखा। मैं देखकर बताऊँगा कि आर्यों का भगवान् उसमें है या नहीं?'' यह हिन्दू समाज के रोगग्रस्त होने का एक प्रमाण है। जब रोगी स्वयं को रोगी ही न माने या रोग को रोग ही न समझे तो ठीक नहीं हो सकते। हिन्दू समाज की रक्षा का भार आज झोला छाप डाक्टरों के ऊपर है। वे बड़बोले तो हैं, परन्तु रोगी के रोग को जानते हुए भी उसका उपचार करना नहीं चाहते। घृणित जाति बन्धन तोड़ने का आन्दोलन इन लोगों ने कभी छेड़ा? हिन्दू कृषक सैकड़ों व सहस्रों आत्महत्यायें क्यों कर रहे हैं? कभी सोचा इन्होंने कि हिन्दू समाज में ही इतनी आत्महत्यायें क्यों हो रही हैं? बलात्कार की घटनाओं की शिकार भी हिन्दू देवियाँ!

अपराधी भी हिन्दू! पढ़-सुनकर रोना आता है। कभी एक नेता जी ने कहा था कि रेप इण्डिया में होते हैं, भारत में नहीं। इसका क्या अर्थ? कहाँ रेप की घटनायें नहीं हुई? योग -योग का शोर मचाने वालें के कुंभ स्नान को देखा क्या? प्रवचन, व्याख्यान, ज्ञान, ध्यान, योग, भक्ति भजन क्या था? बस डुबकी लगाने की होड़। म.प्र. में एक मन्दिर में मदिरा का प्रसाद दिया जाता है। शिवजी की बूटी की महिमा एक योगी बाबा बता रहे थे। बिहार में अगला मुख्य मन्त्री किस जाति का होगा? लव जिहाद का शोर मचाने वालों ने कभी जाति पाँति को चुनौती माना? गुजरात में कुरान का नाम लेकर गोमाँस के दोष के विज्ञापन लगाये गये। कथन तो ठीक था, परन्तु वचन कुरान का नहीं था। आर्य समाज के विद्वानों से सुन तो लिया, प्रमाण का अता-पता न किया। मुसलमान चिल्लाये। कर्मफल को, गीता को मानने वाले संकट मोचन मन्दिरों, ज्योतिषियों से दु:ख निवारण करवाते, स्नान से पाप क्षमा करवाते? कहाँ गई गीता? हिन्दू समाज के झोला छाप डाक्टर रोगों पर चुप्पी साधे बैठे हैं। घर वापिसी का क्या बना? कोई पं. देव प्रकाश, पं. शान्ति स्वरूप, पं. मेघातिथि, सत्यदेव, वीरेन्द्र घर वापिस लाये क्या? आर्य समाज के नाम से ही बिदकने वाले ये डाक्टर समाज को क्या बचायेंगे? प्रमाण, सामग्री मुझसे माँगते हैं और मेरे आर्य समाज का नाम तक लेना नहीं चाहते।

**- वेद सदन, अबोहर, पंजाब- २५१११६**

---

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०**

**पृष्ठ संख्या २६ का शेष भाग....**

अध्ययन होना चाहिए। सुग्रन्थों को पढ़ उनके अनुसार अपने जीवन-ग्रन्थ का अवलोकन करें, यदि सुग्रन्थ के अनुसार अपना जीवन नहीं बन रहा तो उस सुग्रन्थ के पढ़ने का लाभ क्या?

आत्म निरीक्षण से नित्य देखिए कि कौन-कौन काले अध्याय मिटाने योग्य शेष हैं और कौन-कौन वांछनीय पवित्र अध्याय जोड़ने बाकी हैं। मनुष्य सब कुछ पढ़ता है, परन्तु अपने जीवन ग्रन्थ पर दृष्टिपात ही नहीं करता। आज मनुष्य सबके विषय में सब कुछ नहीं तो कुछ न कुछ जानता है, पर अपने विषय में कुछ नहीं जानता और न ही जानने का प्रयत्न करता है।

अपने जीवन-ग्रन्थ में स्वास्थ्य, सदाचार, कर्त्तव्यनिष्ठा, धर्माचरण और ईशभक्ति- ये पाँच अध्याय प्रारम्भ से रहने चाहिए। इनके साथ फिर अनेक अच्छे अध्याय और जोड़े जा सकते हैं।

दूसरों के ग्रन्थों को पढ़कर कहा जाता है- यह ग्रन्थ बहुत बढ़िया है। मजा तब है जब जीवन को पढ़कर कह सकें कि मेरा यह जीवन-ग्रन्थ कितना पावन और सुन्दर है।

यदि आज अपने जीवन में बहुत से काले अध्याय हैं तो घबराने की कोई बात नहीं है। प्रयास से अपने काले अध्याय को श्वेत अध्याय में परिवर्तित करते चले जाएँ और एक दिन उसे एक मात्र सुन्दर शुभ अध्यायों का आदर्श जीवन-ग्रन्थ बना डालिए। हमारे जीवन का वह सर्वाधिक गर्वीला दिन होगा, जब संसार कह रहा होगा- ''यह जीवन कहाँ से कहाँ पहुँचा है, जीवन वास्तव में इसी का नाम है।'' स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन एक ऐसा ही आदर्श उदाहरण है।

भाव यह निकला कि हमें प्रत्येक दिन सोने से पहले जीवन का पन्ना खोलकर देखना चाहिए - आज अवांछनीय क्या किया, क्या वांछनीय नहीं किया? फिर धीरे-धीरे इसे बदलते जाएँगे तो हमारा जीवन-ग्रन्थ भी वास्तव में मानव जीवन का ग्रन्थ होगा।

**- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।**

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

# योग–साधना शिविर

## दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

### प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

**प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ**-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

(: मार्ग :)

**ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।**

-संयोजक

## लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

## परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

## यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

## अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या स ूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०**

## वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

# पुनरुत्थान युग का द्रष्टा

- स्व. डॉ. रघुवंश

कीर्तिशेष डॉ. रघुवंश हिन्दी-जगत् के जाने-माने विद्वान् थे। वे हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी के परिपक्व ज्ञाता तो थे ही, भारत की शास्त्रीयता और उसके इतिहास के अनुशीलन में भी उनकी विपुल रुचि और गति थी। उन्होंने साहित्य के विभिन्न पक्षों पर साहित्य-सर्जन कर अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष और समर्थ लेखक के रूप में वे सर्वमान्य रहे। अपने अग्रज श्रीमान् यदुवंश सहाय द्वारा रचित 'महर्षि दयानन्द' नामक ग्रन्थ की भूमिका-रूप में लिखे गए उनके इस लेख से हमारे ऋषिभक्त पाठक लाभान्वित हों, अत: इसे हम उक्त ग्रन्थ से साभार उद्‌धृत कर रहे हैं। - **सम्पादक**

**पिछले अंक का शेष भाग.....**

वस्तुत: वैदिक संस्कृति में स्वस्थ और स्वच्छन्द जीवन के ऐसे मूल्यों की प्रतिष्ठा रही है, जो व्यक्ति और समाज, व्यक्ति और परिवार, परिवार और समाज, व्यक्ति और राष्ट्र, व्यवहार और अध्यात्म, आत्मा और ब्रह्म के उचित सन्तुलन पर प्रतिष्ठित हैं। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास की पूरी संभावनाएँ समाज की व्यवस्था में समाहित रही हैं और समाज की गति तथा सर्जनशीलता को सुरक्षित रखने के लिए व्यक्ति दायित्व-बोध तथा आत्मानुशासन की प्रक्रिया से अपनी रचनात्मक क्षमता को समृद्ध बनाता रहा है। निश्चय ही संस्कृति की यह परिकल्पना भारतीय जीवन को नये स्तर पर संघटना तथा संरचना के लिए आकर्षक थी और इस भूमि पर भारतीय व्यक्तित्व को नये सन्दर्भों से जोड़ पाना अधिक उचित था। स्वामी दयानन्द के सामने यही संकल्प था कि भारतीय समाज अपनी तत्कालीन अधोगति से मुक्त होकर किसी प्रकार स्वस्थ होकर नई रचनात्मक क्षमता से गतिशील हो सके। उन्होंने स्पष्टत: इस समाज के पतन तथा ह्रास के कारणों को समझा और विवेचन किया। जैसा कहा गया कि मध्ययुगीन ब्राह्मणवाद, पुरोहितों-महन्तों का निहित स्वार्थ, पुराण-पंथ, धर्म और दर्शन की एकांगिता तथा आध्यात्मिक साधनाओं की व्यक्तिनिष्ठा आदि कारणों का विवेचन कर के दयानन्द ने इनका घोर विरोध किया। परन्तु भारतीय समाज के प्रचलित अन्धविश्वासों, अन्यायों, रूढ़ियों, कुरीतियों तथा जड़ताओं के कारण पश्चिमी संस्कृति से आकर्षित नेताओं के समान उन्होंने समस्त भारतीयता अथवा भारतीय संस्कृति को उपेक्षणीय तथा अविकसित नहीं मान लिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति के आदि स्रोत तक जाकर उसकी आन्तरिक शक्ति और ऊर्जा का अन्वेषण किया और फिर उन तत्त्वों के संयोजन के आधार पर भारतीय व्यक्तित्व को पुन: प्रतिष्ठित करने का अथक प्रयत्न किया। वस्तुत: दयानन्द आधुनिक भारत की समस्त अपेक्षाओं से भलीभाँति परिचित थे और उनमें से प्रत्येक को सामने रखकर भारतीय समाज के पुनर्गठन का कार्य उन्होंने शुरू किया था।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के नेताओं ने, मुख्यत: गाँधी ने देश का आह्वान करते समय अपने समाज की जिन समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है और समाज के जिन क्षेत्रों में रचनात्मक कार्य के द्वारा गति प्रदान करने की चेष्टा की है, उन सभी समस्याओं को स्वामी दयानन्द ने बहुत बल देकर सामने रखा था और सभी क्षेत्रों में कार्य करना शुरू किया था। एक भी ऐसी समस्या नहीं है, जिसकी ओर उन्होंने संकेत न किया हो और कोई ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसे उन्होंने छोड़ा हो। समाज के वर्ण-भेद, उनकी असमानता, उनमें छुआछूत, जन्म से वर्णों के विभाजन आदि के बारे में दयानन्द ने अपने प्रखर विचार रखे थे। उन्होंने इस प्रकार की असमानता को, छुआछूत को, जन्म से वर्ण के निर्धारण को धर्म-विरुद्ध और असत्य प्रतिपादित किया, परन्तु उन्होंने कर्म पर आश्रित वैदिक वर्ण-व्यवस्था की स्वीकृति दी है। हम आधुनिकता के समर्थक यह कह सकते हैं कि कर्म पर आश्रित वर्ण-व्यवस्था को स्वीकार कर लेना एक प्रकार का समझौता है, क्योंकि इस प्रकार हम दूसरे मार्ग से परम्परित वर्ण-व्यवस्था का समर्थन करते हैं, परन्तु स्थिति का यथार्थ-विवेचन करने से पता चलता है कि जिन्होंने वर्ण-व्यवस्था को पूरी

तरह अस्वीकार करने की घोषणा की है, उन्होंने अपने जीवन में अभी तक जातिवाद को बहुत महत्त्व दे रखा है। भारतीय राजनीति के विभिन्न स्तरों पर जातिवाद का कितना प्रभाव है, इससे यह प्रमाणित होता है। गाँधी ने सन्त भाव से निम्न जातियों को 'हरिजन' कहा, पर 'हरिजन' शब्द 'अछूत' के समान एक पर्याय मात्र बन कर रह गया। इसकी तुलना में दयानन्द की दृष्टि अधिक स्पष्ट थी। पहले तो उन्होंनें कहा कि समाज के विविध अंग रूप उसके वर्णों में ऊँच-नीच का भाव ही अधर्म है, क्योंकि अंगों का ऊँचा-नीचा स्थान उनकी श्रेष्ठता का निर्धारक नहीं हो सकता। यह कहना नितान्त मूर्खता है कि पैरों से हाथ इसलिए श्रेष्ठ हैं, क्योंकि प्राणी के खड़े होने पर वे ऊपर स्थित होते हैं। समाज की व्यवस्था और सन्तुलन के लिए कार्यों का विभाजन किसी न किसी रूप में अनिवार्य है, पर कार्य के सम्पादन की क्षमता जन्मतः सिद्ध नहीं हो सकती, अतः वर्ण का जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार के तर्क और व्यवस्था में कितना बल है, यह स्पष्ट है। साथ ही दयानन्द ने वर्ण-व्यवस्था के नाम पर जो सामाजिक अन्याय हो रहा था, उसका बड़ा विरोध किया था और इस विद्रोह भाव को समाज की नई रचना में समाहित करने का प्रयत्न भी किया था। बाद के समन्वयवादियों के दृष्टिकोण से उनका विचार कहीं अधिक क्रान्तिकारी रहा है। यह अलग बात है कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के प्रयोग से जिस प्रकार की औद्योगिक और यांत्रिक प्रगति हो रही है, उसमें समाज-रचना का स्वरूप ऐसा बदल रहा है, जिसमें पिछली कर्माश्रित वर्ण-व्यवस्था असंगत हो गई है।

स्वामी दयानन्द ने सत्य धर्म एक ही माना है और उनकी दृष्टि में वह धर्म वही हो सकता है जो श्रेष्ठ मानव मूल्यों की रचनात्मक प्रक्रिया को गतिशील रखने में सक्षम हो सके। बाद के समन्वयवादियों और अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों ने दयानन्द को कट्टरपंथी और खण्डन-मण्डन करने वाले सुधारक के रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है, परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि उनके जैसा उदार मानवतावादी नेता दूसरा नहीं रहा है। उन्होंने धर्म की सदा भारतीय व्यापक परिकल्पना सामने रखी है। वे धार्मिक सम्प्रदायों को अस्वीकार कर शुद्ध मानव मूल्यों पर प्रतिष्ठित धर्म को स्वीकार करने के पक्ष में रहे हैं। सन्तों का दृष्टिकोण मुख्यतः आध्यात्मिक जीवन तक सीमित था, जब कि दयानन्द के सामने भारतीय जन-समाज के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य था। उन्होंने धर्म के निरर्थक कर्मकाण्डों के नाम पर चलाई गई कुरीतियों, अन्धविश्वासों, जड़-पूजाओं और मान्यताओं का घोर विरोध किया है। उन्होंने वस्तुतः जब कभी हिन्दू, मुसलमान या ईसाई धर्म का खण्डन किया है तो स्पष्टतः उन्होंने असत्य, अन्धविश्वास और जड़ मान्यताओं का उल्लेख किया है और यह भी उन्होंने बार-बार घोषित किया है कि सभी धर्मों के मूल में शुद्ध मानव धर्म के तत्त्व विद्यमान हैं। यहाँ तक कि उन्होंने कई अन्य धर्म के नेताओं से प्रस्ताव भी किया कि सम्मिलित रूप से धर्म के मूल तत्त्वों पर विचार करके उन्हें निर्धारित कर लिया जाय और फिर सभी धर्म के नेता उन्हें स्वीकार करके उनका प्रचार-प्रसार करें। उनके मन में धर्म को लेकर कभी कोई दुराग्रह या पक्षपात नहीं रहा, उन्होंने सदा धर्म के श्रेष्ठ तत्त्वों पर ही बल दिया है। एक तथ्य की ओर ध्यान देना आवश्यक है। दयानन्द की प्रमुख चिन्ता भारतीय समाज के पुनरुद्धार की थी। उनके मन में उस समाज की अवस्था से अत्यन्त व्यथा थी। वे उसमें प्रचलित अन्धविश्वास, अन्याय, शोषण तथा नृशंसताओं से मर्माहत हो गये थे। क्रमशः उनको बोध हुआ था कि इस समाज की सदा से ऐसी अवस्था नहीं रही है। एक समय यह समाज मानव मूल्यों का वाहक रहा है, अतः उनका पहला संकल्प भारतीय व्यापक हिन्दू जन-समाज के उद्धार का था और उसके लिए उन्होंने हिन्दू धर्म की जड़ताओं पर सर्वाधिक प्रहार किया है। उनका विश्वास था कि इस आघात के बिना असत्य के मार्ग पर चलने वाले हिन्दू समाज के उद्धार का कोई उपाय नहीं है। उनका सबसे बड़ा विरोध पौराणिकों, ब्राह्मण-पुरोहितों और आडम्बर फैलाकर जनता को गुमराह करने वाले संन्यासियों से था और दयानन्द के विरुद्ध यह निहित स्वार्थों का वर्ग ही सदा रहा। वस्तुतः इस्लाम और ईसाई धर्म की आलोचना उन्होंने प्रासंगिक रूप में की है, क्योंकि हिन्दू धर्म के अन्धविश्वास आदि की आलोचना करके ये धर्मावलम्बी हिन्दुओं को मत-परिवर्तन के लिए प्रेरित करते थे, इस कारण दयानन्द ने यह प्रतिपादित किया है कि इन सभी

धर्मों में हिन्दू-धर्म के समान अन्धविश्वास और जड़ताएँ प्रचलित हैं।

उनका धार्मिक उद्देश्य बहुत ऊँचा था। वस्तुत: उन्होंने संसार के सामने दो महत्त्वपूर्ण बातें रखी थीं। एक तो उन्होंने प्रतिपादित किया कि मूल सत्य तथा मानवीय मूल्यों की सर्जनशीलता से प्रेरित एक ही धर्म है। यह धर्म तत्त्व (अथवा ये तत्त्व) संसार के सभी श्रेष्ठ धर्मों के मूल में निहित है। यह धर्मों की साम्प्रदायिकता है जो उन्हें अलग रूपों में प्रकट करती है। इसके साथ अनेक निहित स्वार्थ जुट जाते हैं और धर्म में अन्धविश्वासों तथा जड़ताओं का आश्रय लेकर असत्य का प्रवेश होता है। उन्होंने इसीलिए बार-बार प्रस्ताव किया कि सभी धर्म के लोग शुद्ध मानवीय धर्म का पालन कर सकते हैं, क्योंकि किसी धर्म का इससे विरोध नहीं हो सकता है और स्थान-स्थान पर यह स्वीकार किया है कि कोई भी धर्मावलम्बी आर्य-धर्म अर्थात् श्रेष्ठ मानव धर्म का पालन कर सकता है। वस्तुत: उनके लिए 'आर्य' शब्द किसी साम्प्रदायिक धर्म का पर्याय कभी नहीं बना, यह उनके द्वारा 'आर्य समाज' की स्थापना से भी सिद्ध है। 'आर्य समाज' कभी किसी धर्म का रूप नहीं ले सका, यह उनकी इच्छा और विश्वास का ही परिणाम था। आजकल भारतीय राजनीति में धर्मनिरपेक्षता की चर्चा काफी होती है, परन्तु उसकी विडम्बना भी स्पष्ट है। स्वामी दयानन्द ने मानव मूल्यों पर प्रतिष्ठित धर्म की जो व्यापक तथा सर्जनशील व्याख्या की थी, वह आज के भारत में अनेक धर्मों के स्वस्थ, सहज और रचनात्मक समन्वय की उचित भूमिका है।

स्वामी दयानन्द ने समाज में स्त्री के स्थान पर विशेष ध्यान दिया था। वे पुरुष के साथ नारी की समानता का पूर्ण समर्थन करते हैं। भारतीय समाज की हीनावस्था का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनके अनुसार यह भी है कि इस समाज में नारी का सम्मानपूर्ण स्थान नहीं रह गया है। वे नारी और पुरुष के अधिकारों की पूर्ण समानता स्वीकार करते हैं, पर दोनों के कार्य-क्षेत्र का विभाजन मानते हैं। आज के बदलते हुए समाज में स्त्री-पुरुष के कार्य-क्षेत्रों का अलगाव संभव नहीं रह गया है, परन्तु इससे दयानन्द के विचारों को संकुचित नहीं माना जा सकता और न उनकी क्रान्तिकारिता पर प्रश्न किया जा सकता है, क्योंकि इस प्रकार जो समाज आज बनता जा रहा है, वह अपने आप में परिस्थिति की उपज है, उसे आदर्श समाज कहना विवादास्पद है। स्त्री-शिक्षा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह, वेश्या-उद्धार आदि अनेक समस्याओं को दयानन्द ने अपने युग के सन्दर्भ में उठाया था और उनका उचित समाधान प्रस्तुत किया था। आज ये प्रश्न हमारे लिए अमहत्त्वपूर्ण हो गये हैं, परन्तु जिस साहस और दृढ़ता के साथ उन्होंने इन समस्याओं का समाधान समाज के सामने रखा था, उससे उनके व्यक्तित्व की क्रान्तिकारिता लक्षित होती है और उनका द्रष्टा रूप भी सामने आता है।

एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष है जो स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व को सूक्ष्मता से उद्घाटित करता है। उन्होंने धर्म को मूल्य के स्तर पर ग्रहण किया है, उससे साम्प्रदायिक व्यवस्था और कर्मकाण्डी पक्ष को बिल्कुल अलग कर दिया है, अत: धर्म संस्कृति के उच्चतम मूल्यों के स्तर को स्थापित करता है। जिस प्रकार संस्कृति के अन्तर्गत सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्तरों के मूल्यों का संचरण होता है, उसी प्रकार सूक्ष्म स्तर पर धार्मिक, कलात्मक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की उपलब्धि का क्षेत्र भी संस्कृति है। इस प्रकार संस्कृति मानवीय मूल्यों की सर्जनशीलता की दृष्टि से अधिक व्यापक है। दयानन्द का सारा प्रयत्न इस प्रकार सांस्कृतिक पुनरुत्थान से सम्बन्धित है। उनके लिए धर्म उसी सीमा तक महत्त्वपूर्ण है, जहाँ तक वह सांस्कृतिक मूल्यों के क्षेत्र में एक भूमिका प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि उनके दृष्टिकोण में संस्कृति के सभी स्तरों का समाहार है और उन्होंने भारतीय जीवन के सभी पक्षों तथा स्तरों के मूल्यों का इस प्रकार निरूपण किया है, जिससे उसका एक व्यापक तथा संश्लिष्ट सांस्कृतिक स्वरूप लक्षित होता है। इसके अन्तर्गत सामाजिक आचार, नैतिक आदर्श, व्यक्तित्व की स्वाधीनता और प्रतिष्ठा, लोकजीवन में समत्व, राजनीतिक आदर्श व्यवस्था, राजतंत्र की लोकसत्तात्मक तथा समत्वमूलक परिभाषा, लोकोन्मुखी तथा साम्यवादी अर्थतंत्र आदि के समस्त मूल्यों का प्रतिष्ठान वेदों को अवश्य माना तथा प्रमाणित किया है, परन्तु इनकी व्याख्या आधुनिक जीवन के अनुरूप की गई है। साथ ही

द्रष्टा के रूप में दयानन्द ने इन समस्त मूल्यों को संस्कृति के मर्म तथा अध्यात्म सम्बन्धी उच्च भूमियों पर प्रतिष्ठित कर तत्सम्बन्धी उच्च मूल्यों में उनका संक्रमण किया है। गाँधी ने अपने सत्य और अहिंसा जैसे मूल्यों में व्यावहारिक तथा पारमार्थिक मूल्य-दृष्टियों का समाहार किया है और भौतिकतावादी तथा अध्यात्मवादी एकांगी संस्कृतियों की तुलना में गाँधी के सांस्कृतिक संतुलन को बहुत महत्त्व मिला है, पर यहाँ ध्यान देने की बात है कि दयानन्द ने लौकिक तथा आध्यात्मिक जीवन के मूल्यों के पारस्परिक अन्त:सम्बन्ध को जितनी स्पष्टता के साथ प्रतिपादित और विवेचित किया है, वह अन्यत्र नहीं मिलता। वस्तुत: जीवन्त, सप्राण, गतिशील तथा सर्जनात्मक संस्कृति में इन दोनों पक्षों का समाहार और उनके मूल्यों का अन्त:संक्रमण अनिवार्य है। स्वामी दयानन्द ने संस्कृति के इसी रूप की परिकल्पना की है और उनकी दृष्टि में यही भारतीय संस्कृति का सच्चा स्वरूप है। उनकी संस्कृति सम्बन्धी अवधारणा के आधार पर समाज के भारतीयकरण के प्रश्न का समुचित उत्तर दिया जा सकता है।

स्वामी दयानन्द आधुनिक युग में ऋषि और द्रष्टा माने जायँगे। उनमें जितनी गहरी यथार्थ की पकड़ थी, उतनी ही व्यापक इतिहास और परम्परा को ग्रहण करने की क्षमता भी। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने समाज की प्रक्रिया को तथा उसके भविष्य की संभावनाओं को पहचाना और फिर उसको एक स्वस्थ और सर्जनशील समाज-रचना की ओर उन्मुख करने का प्रयत्न किया। कोई भी परिकल्पना युग के साथ, परिस्थितियों के सन्दर्भ में परिवर्तित होती है। इस दृष्टि से स्वामी दयानन्द की भारतीय समाज की नयी रचना की परिकल्पना में भी आज अन्तर पड़ जाना स्वाभाविक है, पर उनका भारतीय समाज की वर्तमान स्थिति का निदान आज भी उतना ही सटीक है। उनकी समाज-रचना की परिकल्पना भी बहुत कुछ आज स्वीकार की जा सकती है, क्योंकि उनकी सांस्कृतिक मूल्यों की अवधारणा मानव धर्म की व्यापक प्रतिष्ठा तथा सर्जनशीलता से सम्बन्धित है। परन्तु इनसे भी अधिक महत्त्व की बात है उनके व्यक्तित्व की क्रान्तिकारिता, जो असत्य और अन्याय के सम्मुख अडिग खड़े होने की क्षमता प्रदान करती है और जिसके कारण उन्होंने कभी विश्व में समझौता नहीं किया। आज यह स्पष्ट हो गया है कि समस्त देशी-विदेशी पुराण-पंथ के विरुद्ध सतत विद्रोह करने के लिए ऐसे क्रान्तिकारी व्यक्तित्व की देश को सर्वाधिक आवश्यकता है। इसके बिना देश का कोई भविष्य नहीं है।

**-इलाहाबाद विश्वविद्यालय**

## धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।**
**IFSC - IBKL0000091**

**२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
**IFSC - SBIN0007959**

## दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम- **भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **10158172715**

**IFSC-SBIN0007959**

२. बैंक का नाम- **आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या- **09110400057530**

**IFSC-IBKL0000091**

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

## आस्था भजन ( चैनल ) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

# जिनके हम ऋणी हैं –

# रघुनाथ प्रसाद कोतवाल

आर्य समाज के इतिहास में हम अपना परिचय ऋषि दयानन्द के साथ करते हैं। ऋषि के साथ परिचय करते हुए हम जिन लोगों से परिचित होते हैं, उनमें उनके गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द से परिचित होते हैं, जिनके बिना स्वामी दयानन्द ऋषि दयानन्द नहीं बन सकते थे। दण्डी स्वामी विरजानन्द ने ऋषि दयानन्द को वह दृष्टि दी, जिससे उन्होंने संसार को देखा और सत्य-असत्य का विवेक किया। जिस विवेक ने धर्म और पाखण्ड के अन्तर को स्पष्ट किया और ऋषि दयानन्द वैदिक धर्म का प्रचार करने में सफल हुए तथा पाखण्ड पर आक्रामक प्रहार कर सके। बौद्धिक दृष्टि से गुरु जी ने स्वामी दयानन्द को प्रखर बनाया, वहीं पर कुछ लोग हैं, जिन्होंने यदि सहयोग और सुरक्षा स्वामी दयानन्द को न दी होती तो सम्भव था, इतिहास न बन पाता या कुछ और प्रकार से बनता।

ऋषि दयानन्द के विद्याध्ययन में गुरु जी के अतिरिक्त अनेक सहयोगी हुए हैं। किसी ने दूध का प्रबन्ध किया, किसी ने दीपक के तेल का। मुख्य सहयोग भोजन का था, जो मथुरा निवासी अमरलाल जोशी ने किया, जिनके पौत्र मथुरा शताब्दी के समय थे। उसके बाद वे एक बार अजमेर भी पधारे थे। अब मथुरा के उस घर में सम्भवतः कोई नहीं रहता, सब इधर-उधर चले गये हैं।

प्रचार के समय में जिन्होंने सहयोग किया, वे अनेक महानुभाव हैं, परन्तु मंगलवार १६ नवम्बर १८६९ में काशी शास्त्रार्थ के समय जिन्होंने ऋषि दयानन्द की प्राण रक्षा की, वे थे रघुनाथ प्रसाद कोतवाल। जो बनारस के गुण्डों से बचाकर स्वामी जी को आनन्दबाग के दूसरे सिरे पर जहाँ नगर पालिका भवन है, उसके एक कमरे में ले गये तथा राजा को भी कहा कि आपकी उपस्थिति में एक अकेले संन्यासी के और काशी के सैकड़ों गुण्डे ईंट-पत्थर फेंकें और जान से मारने की चेष्टा करें, यह उचित नहीं, तब राजा ने कोतवाल रघुनाथ प्रसाद से कहा था- धर्म रक्षा के लिये कभी-कभी अनुचित का भी आश्रय लेना पड़ता है। इससे अधिक हम रघुनाथ प्रसाद कोतवाल के विषय में नहीं जानते। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि जो परिवार ऋषि के समय से काशी में रह रहा है, जिनके पौत्र अभी जीवित हैं, उनकी चर्चा आर्य समाज के इतिहास में उस महत्त्व के साथ उल्लिखित नहीं हुई।

गत दिनों काशी के आर्य समाज के कार्यकर्त्ता श्री अशोक कुमार त्रिपाठी जी से भेंट हुई और उन्होंने मुझे बताया कि उनके पास रघुनाथ प्रसाद कोतवाल का चित्र और उनके जीवन पर लिखी सामग्री सुरक्षित है। मैंने माँगी तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति देते हुए कहा कि मैंने यह सामग्री परोपकारी के लिये ही रखी है, अतः किसी और को नहीं दी। मैं बनारस जाकर वह चित्र और सामग्री आपके पास भेज दूँगा। अपने वचन के अनुसार त्रिपाठी जी ने स्वनाम धन्य रघुनाथ प्रसाद कोतवाल जी तथा उनके पौत्र मेवालाल पाण्डे जो वर्तमान स्वामी ओमानन्द जी से संन्यास दीक्षा लेकर केवलानन्द बन गये हैं। इन दोनों का चित्र परोपकारी को भेजा, जो इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है। यह परोपकारी पत्र एवं परोपकारिणी सभा के लिये गौरव की बात है।

श्री अशोक कुमार त्रिपाठी जी ने जो रघुनाथ प्रसाद कोतवाल का परिचय भेजा है। वह परिचय आर्य हरीश कौशल पुरी द्वारा १८ जुलाई २००८ का लिखा है। संयोग से इस लेख पर उनका पता और दूरभाष संख्या भी अंकित है। मैंने लेखन की प्रामाणिकता के लिये उनसे सम्पर्क किया तो उन्होंने केवल इतना स्वीकार किया कि इसकी प्रामाणिकता बस इतनी है कि श्री रघुनाथ प्रसाद कोतवाल के पौत्र स्वामी केवलानन्द जी ने अपनी स्मृति और परिवार में चली आ रही बातों के आधार पर जो बोला, मैंने उसे लिख दिया, इससे अधिक मेरी कोई प्रामाणिकता नहीं है। मैंने स्वामी जी से सम्पर्क कर इसकी प्रामाणिकता को पुष्ट

करने का प्रयास किया, परन्तु आयु अधिक होने के कारण वे प्रश्नों के उत्तर के स्थान पर अपनी बात को ही दोहराते रहे। यह बात कराने में इनके डॉ. पुत्र का योगदान रहा।

जो परिचय अशोक त्रिपाठी जी ने भेजा है। उसमें योगी का आत्मचरित वाली शैली है, जिसको प्रमाणित नहीं किया जा सकता। इस लेख में समय और स्थान में समन्वय नहीं है, अतः उस लेख को यथावत् प्रकाशित न करके उस सामग्री का उपयोग करते हुए ये पंक्तियाँ लिखी हैं। रघुनाथ प्रसाद कोतवाल का जन्म २८ जनवरी १८२६ को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के मेहनगर गाँव में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री महावीर प्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती वसुन्धरा पाण्डेय था। ये भारद्वाज गोत्रीय सरयू पारी ब्राह्मण थे। रघुनाथ पाण्डेय ने १२वीं की शिक्षा लखनऊ से पूरी की। इनको तत्काल ही पुलिस विभाग में नौकरी मिल गई। सर्वप्रथम इनकी नियुक्ति देहरादून में हुई फिर उनको सी.आई.डी. इंस्पेक्टर बनाकर कानपुर भेजा गया। ये सरकार के विश्वासपात्र कर्मचारी थे। आगे चलकर इनका कार्य क्षेत्र कानपुर से लेकर बुन्देलखण्ड तक बढ़ा दिया गया। इनकी सेवा से प्रसन्न होकर अंग्रेज सरकार ने रघुनाथ प्रसाद कोतवाल को राय की उपाधि से सम्मानित किया, परन्तु रघुनाथ प्रसाद कोतवाल ने इस उपाधि का नाम के साथ कभी प्रयोग नहीं किया, क्योंकि ऐसा करने में उन्हें गर्व के स्थान पर अपमान का अनुभव होता था।

ऋषि दयानन्द रघुनाथ प्रसाद कोतवाल से बहुत प्रेम करते थे। एक दिन वे अपने धर्मपत्नी रामप्यारी पाण्डेय के साथ महर्षि से मिले, तब स्वामी जी ने दोनों को वेदोपदेश देकर वेदानुसार जीवन जीने की प्रेरणा दी। उसी के अनुसार उनके परिवार में आर्य परम्परा का निर्वाह किया जा रहा है, कोतवाल जी के पुत्र श्री मिश्रीलाल जी तथा उनके पुत्र मेवालाल जी आज तक श्रद्धापूर्वक परिवार में वैदिक धर्म का पालन कर रहे हैं।

कहा जाता है कि स्वतन्त्रता संग्राम के समय इनकी नियुक्ति झाँसी के कोतवाल के रूप में थी, उन्होंने परोक्ष रूप से रानी लक्ष्मीबाई को युद्ध में सहायता भी पहुँचाई थी। इसका कारण था, रघुनाथ प्रसाद के चाचा रघुवीर पाण्डेय झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के सलाहकार थे और रानी के विधवा होने पर रानी को ओजपूर्ण कवितायें और कहानियाँ सुनाकर प्रोत्साहित किया करते थे। महिला सेना के निर्माण में भी इनका योगदान था। इसी प्रकार परिवार के अन्य सदस्य भी स्वतन्त्रता संग्राम में भाग ले रहे थे। रघुनाथ प्रसाद कोतवाल के छोटे चाचा शिवनन्दन, श्रवण कुमार, कुँवरसिंह के साथ लड़ाई में शामिल हुये और कंधरापुर के पास तमसा के किनारे वीरगति को प्राप्त हुए। कुँवरसिंह युद्ध करते हुए आगे बढ़ते रहे, वे आजमगढ़ के सिधारी पुल पर तमसा नदी के किनारे पहुँचे थे कि उनके हाथ में एक अंग्रेज सिपाही की बन्दूक की गोली लगी, कुँवरसिंह ने तत्काल तलवार से गोली लगा अपना हाथ काट दिया और नदी में प्रवाहित कर दिया। एक हाथ से युद्ध करते हुए बक्सर होते हुये, अपने गाँव जगदीशपुर पहुँचे। ८५ वर्ष की अवस्था में उनका स्वर्गवास हुआ। बाद में उनके सुपुत्र जगदीशसिंह ने मोर्चा सम्भाला और अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करते रहे।

इस प्रकार रघुनाथ प्रसाद कोतवाल एवं उनके परिवार का जीवन देश की स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये अर्पित हुआ।

रघुनाथ प्रसाद कोतवाल को उनके चाचा ने ही प्रेरणा देकर पुलिस विभाग में भर्ती कराया था और निर्देश दिया था कि तुम्हें अंग्रेजों को प्रसन्न रखते हुए, भारत माता की दासता की जंजीरों को काटना है, जिससे साँप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। रघुनाथ प्रसाद कोतवाल ने और कितने भी कार्य देशहित में किये होंगे, परन्तु काशी में उस दिन काशी के गुण्डों से महर्षि के प्राणों की रक्षा करके जो महान् कार्य किया, उससे बड़ा और कोई कार्य नहीं हो सकता। यह उनकी देश और समाज की सबसे बड़ी सेवा है।

इसके लिये यह देश और समाज उनका सदा ऋणी रहेगा।

**- धर्मवीर**

# क्या हम अपने ही देश में रहते हैं?

**- एम. वी. आर. शास्त्री**

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में जो हुआ, वही सब कुछ हैदराबाद विश्वविद्यालय में घटित हुआ था। वहाँ देशद्रोह की घटना को दलित उत्पीड़न बना दिया गया। दिल्ली में उसका वास्तविक रूप सामने आ गया। हैदराबाद विश्वविद्यालय की घटना की वास्तविकता। पढ़िये 'आन्ध्र भूमि' के सम्पादक की लेखनी से। **- सम्पादक**

**भावनाओं की तीव्रता ने सच्चाई को छुपा दिया-**

पाकिस्तान के समर्थन को प्राप्त उग्रवादियों द्वारा मुंबई में किये गए बम विस्फोट में तीन सौ बेकसूर लोगों की जानें चली गयीं। याकूब मेनन इन षड्यंत्रों का सूत्रधार रहा, जिसे दो दशकों के बाद पिछले साल फाँसी की सजा दी गई। भारत के नागरिकों ने इस बात को लेकर खुशी प्रकट की कि देर से ही क्यों न सही, इंसाफ हुआ, लेकिन भारत में रहने वाले पाकिस्तान के समर्थकों, उन बुद्धिजीवियों, जिनके दिमाग में घुन लग गया और कुटिल राजनीतिज्ञों ने याकूब को फाँसी की सजा देने पर अपनी प्रतिक्रिया जोर-शोर से व्यक्त की है।

इस अवसर पर हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में याकूब मेमन के समर्थकों ने जो हंगामा किया, उसे देखकर देश भर के लोग अवाक् रह गये। विडंबना की बात यह है कि तीन सौ लोगों की जानें लेने का जिम्मेदार खूँखार आतंकवादी याकूब को फाँसी की सजा देने के फैसले का विरोध करते हुए एक ख्यातिप्राप्त विश्वविद्यालय के परिसर में छाती पीट-पीट कर रोना और दिवंगत याकूब की आत्मा को शांति दिलाने की कामना करते हुए प्रार्थनाओं का आयोजन होना- हमें यह सोचने को मजबूर करने लगे हैं कि हम क्या अपने ही देश में रहते हैं? जुलूस निकाले गए। कई लोगों के हाथों में प्लेकार्ड पर लिखे गए इस नारे को देखकर लोग चकित रह गए कि "एक याकूब को फाँसी की सजा देने पर हर घर में एक-एक याकूब का जन्म होगा।"

इसी विश्वविद्यालय के एक छात्र ने उस विश्वविद्यालय में होने वाली घटनाओं का जोरदार खण्डन किया, लेकिन उसने याकूब मेमन के समर्थकों के कार्य-कलापों को रोकने का प्रयत्न नहीं किया। किसी पर हमला नहीं किया। किसी के नाम को लेकर उसने किसी की निंदा नहीं की, लेकिन अपने 'फेसबुक' की 'दीवार' पर अपनी भाषा में उसने तो यह लिख दिया कि याकूब मेनन के समर्थकों ने विश्वविद्यालय में जो कुछ किया, वह गलत है। उसके विचारों में आपत्तिजनक कोई बात थी ही नहीं। एक देशद्रोही आतंकवादी का खुलेआम समर्थन करते हुए एक 'अमरवीर' के रूप में उसकी प्रशंसा करने का अधिकार जब दूसरों को मिला है, तो इस घटना की निन्दा करने की आजादी उस छात्र को क्यों नहीं मिलनी चाहिए?

लेकिन याकूब मेमन के समर्थकों ने ऐसा नहीं सोचा। 'क्या तुम हम पर उँगली उठाने लायक बन गए हो' कहकर आधी रात के समय में, लगभग तीस लोगों ने छात्रावास में घुसकर कमरे में उस पर हमला किया। उस छात्र को कितनी बुरी तरह से पीटा गया, इसका अब विशेष महत्त्व नहीं है। उस छात्र का विरोध करने वाले छात्र-नेताओं ने भी इसे स्वीकार किया कि वे लोग उस छात्र को बाहर के गेट तक खींचकर ले गए और सिक्योरिटी के कमरे में उस छात्र से अपने किये हुए पर क्षमा याचना करते हुए लेख लिखवाया। 'फेसबुक' में उस छात्र ने जो लिखा, उसे उसी छात्र से निकलवा दिया गया।

तो क्या यह अत्याचार नहीं है? यदि केन्द्रीय विश्वविद्यालय भारत की अपेक्षा पाकिस्तान के हैदराबाद में हुआ होता... यदि एक पाकिस्तानी को फाँसी की सजा दिये जाने की घटना का एक हिन्दुस्तानी छात्र ने समर्थन किया होता, तब हम स्थिति को समझ सकते हैं कि जोश में आकर छात्रों ने उसे क्यों पीटा। प्रश्न यह उठता है कि भारत के एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को प्रकट कर जिस भारतीय छात्र ने राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों को खण्डन किया तो क्या उसे कोई सुरक्षा नहीं मिलनी चाहिए? मानव-अधिकार और कानून द्वारा प्रदत्त अधिकार इस देश में केवल राष्ट्र-विरोधी ताकतों को ही क्यों मिलते हैं, राष्ट्र के समर्थकों को क्यों नहीं?

जिस छात्र पर हमला हुआ, वह तेलंगाना के एक पिछड़े वर्ग के एक सामान्य परिवार का सदस्य है। हमारे बुद्धि जीवियों द्वारा आठों पहर जिस "सामाजिक न्याय"

की चर्चा की जाती है, उसी न्याय की मुखापेक्षिता को लेकर जीवन बिताने वाला एक सामान्य परिवार का सदस्य है। विश्वविद्यालय से उसे सामाजिक न्याय दिलाने की माँग उसकी माँ ने की है। अत्याचारी ताकतों ने उसकी माँ को रोक लिया। अंतिम विकल्प के रूप में उसने अदालत के दरवाजे खटखटाए। अदालत ने विश्वविद्यालय से इस घटना के बारे में विवरण देने को कहा। विश्वविद्यालय ने पाँच छात्रों को निलंबित कर दिया। इस निर्णय का खंडन करते हुए छात्र आंदोलन करने लगे। दुर्भाग्यवश एक छात्र ने आत्महत्या कर ली।

इस घटना के बाद देश भर के लोगों का ध्यान इस विश्वविद्यालय की तरफ गया। इन बातों की चर्चा सभी करने लगे कि क्या हुआ और उस छात्र ने क्यों खुदकुशी कर ली? तरह-तरह के विचार सामने आने लगे। यह कहकर हम किसी की बात को टाल नहीं सकते कि यह तर्कसंगत या सत्य-सम्मत नहीं है। किसी वर्ग की भावनाओं को नीचा दिखाने की आवश्यकता भी नहीं है। जो वाद-विवाद हो रहा है, उसकी चर्चा करना भी अपेक्षित नहीं है।

दिवंगत छात्र रोहित के माँ-बाप ने स्वयं कहा कि हम ''वड्डेरा'' जाति के हैं। 'वड्डेरा' जाति 'ओ.बी.सी' में आती है। उस छात्र का पिता भी यही कहने लगा कि हम वड्डेरा जाति के हैं। यदि यह सच है तो रोहित दलित वर्ग का नहीं था। समाचार साधनों द्वारा जो प्रचार हो रहा है कि रोहित अनुसूचित जाति का है, वह गलत है।

यदि रोहित दलित वर्ग का नहीं था, तो केन्द्रीय विश्वविद्यालय में दलितों पर अत्याचार होने के संदर्भ में जो आन्दोलन चल रहा है, उसे भी सरासर झूठ कहना नितांत उचित होगा। यह सत्य है कि देश में दलित समाज में शोषण, अपमान और उपेक्षा के कारण असंतोष रहा, वही इस विश्वविद्यालय के दलित छात्रों और अध्यापकों में भी मौजूद है। यह निर्विवाद है कि समाज के समष्टि के कल्याण की कामना रखने वालों का यह प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए कि दलित वर्ग के लोगों के मानसिक तनाव को दूर करने के लिए उनकी समस्याओं का अध्ययन करें और उन्हें दूर कर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट कर उनके विकास में सहयोग दें। दलित वर्ग के लोगों में असहिष्णुता और असंतुष्टि के कई कारण हैं। विश्वविद्यालय के प्रशासकों की नीति और उनके निर्णय भी इसके कारण हो सकते हैं। दलित वर्ग के शोध-छात्रों को निलंबित करने के बारे में भी सोच-विचार करना आवश्यक है। इनकी जाँच करनी होगी। दोषियों को, चाहे कोई भी क्यों न हो, सजा देनी चाहिए। कई वर्षों से इस विश्वविद्यालय में जो अशांतिपूर्ण वातावरण मौजूद है उसमें बदलाव लाने की आवश्यकता है।

यह निर्विवाद है विश्वविद्यालय को मंच बनाकर जो राजनीतिक चालबाजी नेता लोग दिखाने लगे, उसे देखकर आम आदमी एक ही बात सोच रहा है कि याकूब मेनन के समर्थकों ने जो हंगामा किया, वही इन सारी घटनाओं के मूल में हैं, इसके बारे में कोई नहीं बोलता है। विश्वविद्यालय की पवित्रता को भंग करने वाले लोगों को सजा देना आवश्यक है या नहीं? दुनिया भर में इस्लामी आतंकवाद का प्रकोप बढ़ रहा है। आई.एस.एस. के समर्थक हैदराबाद और देश के कई प्रांतों में पकड़े जा रहे हैं। पठानकोट पर पाकिस्तान ने परोक्ष रूप से हमला किया। इस नेपथ्य में विश्वविद्यालयों में आतंकवादियों के समर्थन में जुलूस निकाल कर उनकी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों को राष्ट्र-विरोधी मुद्दे के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है या नहीं?

यदि विश्वविद्यालय के प्रशासकों के गलत निर्णयों के कारण छात्रों को नुकसान होता है, तो विश्वविद्यालय की एक समस्या के रूप में इस पर प्रशासन के साथ छात्र-चर्चा कर न्याय की माँग कर सकते हैं। जिन अधिकारियों के निर्णयों के कारण उन्हें नुकसान हुआ, उन अधिकारियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने की माँग करते हुए छात्र आन्दोलन चला सकते हैं। इस मामले में केन्द्रीय मंत्रियों को खींचने की क्या आवश्यकता है? वे क्या कर सकते हैं? यदि एक छात्र-संघ केन्द्रीय मंत्री दत्तात्रेय जी को याकूब मेनन के समर्थकों के कुकृत्यों का विवरण देकर न्याय की माँग करता है तो संबंधित मंत्रालय को उस पत्र को भेजकर आवश्यक जाँच करवाने का अनुरोध वे करें, तो इसमें क्या गलती है? स्थानीय नेता के रूप में राष्ट्र विरोधी ताकतों के विरुद्ध कार्यवाही करने की माँग करना क्या उनका कर्त्तव्य नहीं है? एक राष्ट्र-विरोधी घटना से दलित छात्रों और दलित अध्यापकों का क्या सम्बन्ध है? क्या तीन सौ लोगों की जान लेने वाले आतंकवादी याकूब मेनन को श्रद्धांजलि देने के लिये समारोहों का आयोजन करना और उसकी मृत्यु पर चिंता प्रकट करना देश-द्रोह नहीं है? सह-केन्द्रीय

मंत्री द्वारा माँग किये जाने पर सम्बन्धित विश्वविद्यालय को इस सम्बन्ध में जाँच करने और उचित कार्यवाही लेने का आदेश देना, क्या केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री का कर्त्तव्य नहीं होता? इस विषय की महत्ता को दृष्टि में रखकर कुछ महीने की कालावधि के बाद स्थिति की समीक्षा करना न्यायसंगत नहीं है? इसका मतलब यह कैसे होता है कि मंत्री महोदय ने विश्वविद्यालय पर इस मामले को लेकर कार्यवाही करने का अनुचित दबाव डाला? किसी व्यक्ति के विरुद्ध कोई निर्णय लेने के पक्ष में मंत्री ने सुझाव दिया, इसका क्या सबूत है? यदि ऐसा नहीं तो केन्द्रीय मंत्रियों को दोषी ठहराना क्या उचित है? इस मामले को दलितों के विरुद्ध किये गए कारनामे के रूप में चित्रित किया गया है। यदि मंत्री महोदय ने कहा कि यह दलितों और दलितेतरों की बीच के संघर्ष का मामला नहीं, तो इसमें क्या गलती है?

जिस छात्र ने खुदकुशी की, उसने स्वयं लिखा कि मेरी मृत्यु का कोई जिम्मेदार नहीं है और इस घटना को लेकर किसी को परेशान करने की जरूरत नहीं है। यह समझ में नहीं आता कि केन्द्रीय मंत्री रोहित की मृत्यु के जिम्मेदार कैसे होते हैं? एफ.आई.आर. में मंत्रियों के नाम लिखने की माँग करना कहाँ तक न्यायसंगत है?

जिस छात्र ने आत्महत्या कर ली, वह कायर नहीं था। वह साहसी युवक था, जिसने यह घोषणा की कि ''मैं केसरिया रंग के ध्वज को फाड़ दूँगा और ए.बी.वी.पी., आर.एस.एस. और हिन्दूवाद से मुझे सख्त नफरत है।'' स्वामी विवेकानंद को मिथ्या बुद्धिजीवी मानने वाले ये छात्र क्या बुद्धिमान हैं? क्यों ऐसा छात्र विश्वविद्यालय के निर्णयों से डरेगा और खुदकुशी कर लेगा? ऐसा मानना युक्तियुक्त नहीं होगा कि यह छात्र आंदोलन को बीच में ही छोड़कर अपने जीवन का अंत कर लेगा? क्या स्मृति ईरानी जी या दत्तात्रेय जी ने अदृश्य रूप में उसके गले में फंदा डाल दिया? यह संभव नहीं। तो रोहित की मृत्यु का कोई अन्य प्रबल कारण हो सकता है। वह क्या है?

अंबेडकर छात्र संघ और एस.एफ.आई. हर मुद्दे को अपने पक्ष में मोड़ने की क्षमता रखते हैं। इसी कारण से रोहित ने अपने अंतिम बयान में इसका जिम्मेदार कोई नहीं लिखकर उन्हें दूर रखा। यदि छात्र संघ दो केन्द्रीय मंत्रियों के नाम एफ.आई.आर. में लिखने की माँग करता, तो रोहित के अंतिम बयान के अनुसार छात्र-संघ की इस धारणा में भूमिका की माँग आवश्यक नहीं है? (द हिन्दू पत्रिका से उद्धृत) क्या माननीय स्मृति ईरानी जी गगन बिहारी बनकर आई और 'सिम' निकाल लिया? आत्महत्या से जुड़ी कई शंकाओं की जाँच करवाने के आवश्यकता नहीं है? क्या छात्र-संघों की माँग की अनुरूप जाँच के पूर्व ही उन लोगों को सजा देना आवश्यक नहीं है?

दिल्ली की राजनीति में कई मुद्दों को लेकर स्मृति ईरानी से केजरीवाल के कई मतभेद हो सकते हैं। केन्द्रीय विश्वविद्यालय में हुई घटना को एक मौके के रूप में पाकर केजरीवाल ने स्मृति ईरानी और मोदी सरकार पर आरोप लगाए। अंशकालिक राजनीतिज्ञ राहुल गाँधी जी नेशनल हेराल्ड के मामले में कारावास की सजा भुगतने के पूर्व मोदी सरकार पर आरोप लगाकर उसे गद्दी से हटाकर सरकार में आने का प्रयत्न करने लगे है। बिहार राज्य के चुनावों के पूर्व भाजपा के प्रति असहिष्णु रहने वाले राजनीतिक दल अब कुछ राज्यों में आने वाले चुनावों में भाजपा को परास्त करने इस मौके का फायदा उठाने लगे। एक छात्र की मौत से ये सभी फायदा उठाने का प्रयत्न करने लगे। मोदी सरकार को सत्ता से हटाने की ताक में लगे रहे राजनीतिक दल एक विश्वविद्यालय में दलित छात्रों और छात्र-संघों को अपनी क्रीड़ा में मोहरे बनाकर चाल चलने लगे हैं। क्या छात्रों के निलंबन को रद्द करने और केन्द्रीय मंत्रियों को इस्तीफा देने की माँग, जाँच के बिना न्याय संगत है? क्या विश्वविद्यालय के छात्र इसका निर्णय कर सकते हैं कि केन्द्रीय सरकार में मंत्री कौन होगा?

पता नहीं, केन्द्रीय विश्वविद्यालय का मामला किस हद तक जाएगा और इसका अंत क्या होगा। एक केन्द्रीय मंत्री द्वारा दूसरे केन्द्रीय मंत्री को, राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों को रोकने और अपेक्षित जाँच करवाने की माँग करते हुए लेख लिखना अनुसूचित जाति एवं जनजातियों के लोगों पर अत्याचार विरोधी कानून के अन्तर्गत विचाराधीन होगा? एक पाकिस्तानी आतंकवादी की प्रशंसा करना कानूनी होगा? राष्ट्र-विरोधी ताकतों के विरुद्ध आवाज उठाना क्या बहुत बड़ी गलती होगी? इस प्रकार की विचारधारा हमें कहाँ ले जा रही है? इस नेपथ्य में यह प्रश्न उठ रहा है कि - क्या हम अपने ही देश में रहते हैं?

**- सम्पादक 'आन्ध्र भूमि', हैदराबाद, तेलंगाना**

# वैदिक पुस्तकालय अजमेर
## द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार ( २ भाग में )

**मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६**

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्त्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

**२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरित:**

**मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२**

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

**३. इतिहास की साक्षी: लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु**

**मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६**

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

**४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती**

**मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८**

**५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव**

**मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८**

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

# जीवन-ग्रन्थ

-रमेश मुनि

हम कभी इस बात पर विचार नहीं करते कि परमपिता परमेश्वर ने हमें यह मानव जीवन, मानव शरीर क्यों दिया हैं? किसलिए दिया है? क्योंकि हम आज तक संग्रह करने में ही लगे हुए हैं- वह संग्रह चाहे लौकिक पदार्थों का हो या लौकिक बातों का या फिर विचारों का। इसी ताने-बाने में हम फँस जाते हैं। इस बात पर विचार करने का न ध्यान रखते हैं और न ही समय निकाल पाते हैं। किसी से कहा जाता है कि आर्य समाज में यज्ञ, सत्संग पर आया करें लाभ मिलेगा तो उत्तर मिलता है- क्या करें, चाहते तो हम भी हैं, किन्तु समय ही नहीं मिलता। यदि इसी सद्ग्रन्थ के स्वाध्याय से या विद्वान् के सत्संग से यह विचार बन जाए कि मुझे अपना जीवन चलाने के लिए लौकिक पदार्थों का इतना परिग्रह या संग्रह करने की आवश्यकता नहीं है अथवा इनको थोड़ी मात्रा में प्राप्त करके भी जीवन सुख पूर्वक चलाया जा सकता है तो मन पर अपरिग्रह का प्रभाव होने पर जीवन की वास्तविकता को जानने की इच्छा उत्पन्न होती है। इस बारे में जानने के साधन जुटाने का प्रयास होने लगता है।

महर्षि पतञ्जलि ने योग दर्शन के साधन पाद में इसी के बारे में सूत्र दिया है-

**''अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथन्तासम्बोधः।।''**

-योग. २/३९

अर्थात् जब मनुष्य विषयों के प्रति आसक्ति से बच कर सर्वथा जितेन्द्रिय व्यवहार करता है, तब मैं कौन हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ और मुझे क्या करना चाहिए? अर्थात् कैसे कार्य करने से मेरा कल्याण होगा- इस प्रकार के शुभ गुणों का विचार उसके मन में फिर स्थिर हो जाता है। विचारने पर कि मुझे मानव शरीर क्यों मिला है, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, साँप, बिच्छू का भी मिल सकता था, नहीं मिला तो इसका क्या कारण है? चिन्तन करने पर कर्म और कर्म फल सामने आता है कि पिछले जन्मों में अच्छे कार्य पुण्य कर्म पाप-कर्मों से अधिक किए थे, जिसके कारण मानव शरीर मिला है और आगे इस जीवन में भी पुण्य कर्म करने के लिए प्रेरणा मिलती है।

चिन्तन करें कि हम कामना करते हैं, इससे होगा क्या? दूसरों ने कामनाएँ की थीं, उनका क्या हुआ? इस प्रकार पीछे-पीछे चलते जाएँ तो इतिहास बन जाएगा और कामना का वेग शान्त हो जाएगा। कामना से जो उपलब्धि हो रही है, वह हमारे अन्दर (आत्मा में) नहीं जाती, अन्दर केवल बुद्धि या सम्वेदना जाती है, वस्तु के रूप में कुछ नहीं मिलता। शक्ति मन से उठती है और मन में ही बैठ जाती है। मन की क्षमता उद्बुद्ध होकर वृत्ति बन जाती है और भोगों के कारण इन्द्रियों की प्रेरणा से संस्कार बनते हैं, इनके कारण हम कार्य करने में प्रवृत्त होते हैं। देखना चाहिए कि मिला क्या है? केवल अनुभूति कोई वस्तु नहीं है। हम माँगते हैं तो एक ही वस्तु मिलती है और माँगते माँगते थक जाते हैं, ऐसा विचार कर कामना इच्छा को रोकें। रोकना एक ही उपाए से हो सकता है- विचार कर लें कि मुझे नहीं चाहिए। इच्छा को बुद्धि पूर्वक, नियन्त्रित, शिष्ट आदेश से रोकना है। ऋषि का ऐसा ही आदेश है। दूसरों से आदेश के मिलने पर व्यक्ति स्वच्छन्द नहीं हो पाता, इच्छाएँ नियन्त्रित हो जाती हैं। वृत्तियों को रोकने में सफलता मिलती है और अभ्यास से धीरे-धीरे काम, क्रोध, लोभ आदि दोष समाप्त होने लगते हैं। इच्छाएँ या वृत्तियाँ अनियन्त्रित होती हैं, जब हम अपने स्वयं के व्यवहार को नहीं पढते। स्वामी विद्यानन्द जी 'विदेह' द्वारा लिखित ''चिन्तनालोक आलोक २'' में वर्णन किया है कि पृथिवी पर करोड़ों ग्रन्थ लिखे जा रहे हैं, साक्षरता बढ़ने से पढ़ने की रुचि भी बढ़ती जा रही है, किन्तु इससे मानवता का ह्रास हो रहा है, क्योंकि मानव पढ़ तो बहुत रहा है, किन्तु पढ़े पर मनन और आचरण नहीं करता। आर्ष आदेश स्वाध्याय का है, पढ़ने मात्र का नहीं। स्वाध्याय अर्थात् स्व का अध्ययन। सुग्रन्थों के पठन के साथ स्वग्रन्थ का भी

**शेष भाग पृष्ठ संख्या ११ पर....**

# परोपकारिणी सभा द्वारा किये जा रहे अनुसन्धान कार्य में एक और कीर्तिमान

-सत्येन्द्र सिंह आर्य

परोपकारी पाक्षिक के वर्ष २०१५ के जून द्वितीय अंक में मैंने एक लेख में परोकारिणी सभा द्वारा किये जा रहे अनुसन्धान विषयक कार्य की चर्चा की थी। अनुसन्धान का कार्य सभा द्वारा निरन्तर किया जा रहा है, उसमें समय लगता है, परन्तु देर-सबेर सफलताएँ मिलती रहती हैं।

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने ईसाई मत की भी समीक्षा तेरहवें समुल्लास में की है। इस्लाम मतावलम्बियों की भाँति ईसाई विद्वान् भी कभी-कभी कहते रहते हैं कि स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में बाइबिल के जिन-जिन स्थलों की समीक्षा की है, वह बातें बाइबिल में ज्यों की त्यों नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रभाव से बाइबिल में भी धीरे-धीरे विभिन्न संस्करणों में बहुत परिवर्तन हुए हैं और वर्तमान संस्करणों में शब्द वैसे नहीं हैं, जैसे स्वामी जी ने आयत, पर्व और क्रमांक लिखकर पता दर्शाते हुए लिखे हैं। मेरे मित्र प्रा. कुशलदेव जी बाईबिल के उस पुराने संस्करण की खोज में जीवन भर लगे रहे, परन्तु १९ वीं शताब्दी का संस्करण उन्हें नहीं मिल सका। प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने कुरान का पुराना भाष्य खोजकर परोपकारिणी सभा को सौंपकर आर्यजगत् को निश्चिन्त कर दिया, परन्तु बाइबिल का पुराना संस्करण उन्हें भी नहीं मिला। उस पुराने संस्करण की एक प्रति पूज्य श्री अमर स्वामी जी (पूर्व नाम ठा. अमर सिंह आर्य पथिक) के पास थी। उनके निधन के पश्चात् प्रो. रतन सिंह जी ने जिज्ञासु जी को अपने यहाँ बुलाया था और बाइबिल की वह प्रति वे जिज्ञासु जी को सौंपना चाहते थे, परन्तु जब जिज्ञासु जी उन्हें मिलने गए तो जिस व्यक्ति के पास उस पुस्तकालय की चाबी थी, वह उस दिन वहाँ नहीं था। जिज्ञासु जी अबोहर वापस आ गए। बात आई-गई हो गयी। प्रो. रतन सिंह जी दिवंगत हो गए। वह कार्य अपूर्ण ही रहा।

बाईबिल की उस पुराने संस्करण की प्रति प्राप्त करने का प्रयत्न मैंने भी किया, परन्तु मुझे भी बाईबिल का लन्दन से वर्ष १९४८ में Bible Society of Great Britain द्वारा प्रकाशित संस्करण मिल सका था। वर्तमान समय में वह प्रति प्रियवर श्री राजवीर आर्य जी के पुस्तकालय में है।

पुराने प्रामाणिक ग्रन्थों के महत्त्व को जो लोग समझते हैं, प्रिय राजवीर जी उन्हीं ऋषि भक्तों में से एक हैं। बाइबिल के पुराने संस्करण की वे भी खोज में थे और निरन्तर प्रयासरत रहे। आर्य जगत के लिए यह प्रसन्नता की बात है कि १९ वीं शताब्दी के अन्तिम चतुर्थांश (क्वार्टर) में इलाहाबाद से मुद्रित बाइबिल के उस संस्करण की प्रति श्री राजवीर जी को प्राप्त हो गयी है, जिसकी भाषा शब्दश: उन सन्दर्भों से पूर्णत: मिलती है, जो महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश में उद्धृत किए हैं। यह अमूल्य प्रति भी अब परोपकारिणी सभा की सम्पत्ति होगी। विरोधियों द्वारा किये जा रहे वार-प्रहार का उत्तर देने के लिए ऐसे ग्रन्थों की आवश्यकता पड़ती है। इस दृष्टि से यह एक कीर्तिमान है।

कुछ वर्षों पूर्व आर्य समाज की शिरोमणि सभा के एक स्वयंभू प्रधान सिख नेताओं की सभा में जाकर यह आश्वासन दे आये थे कि सत्यार्थ प्रकाश में उस स्थल पर भाषा में परिवर्तन कर दिया जाएगा, जिस पर उनका कहना है कि गुरु ग्रन्थ साहब में वैसा नहीं लिखा है- यथा- ''वेद पढ़े ब्रह्मा मुए सारे वेद कहानी'', परन्तु वास्तव में इस प्रकार का भाव वहाँ है। इस प्रकरण का उत्तर पूज्य स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थ वैदिक धर्म और सिख गुरु में पहले ही दिया हुआ है। गुरु ग्रन्थ साहब में ऐसे कई प्रकरण हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में हैं, जो हिन्दुओं के ग्रन्थों में है ही नहीं, परन्तु सिख नेता और विद्वान् उन स्थानों पर गुरु ग्रन्थ साहब में भाषा-परिवर्तन के लिए सहमत नहीं होंगे। अनुसन्धान का यह कार्य उस समय परोपकारिणी सभा ने ही किया था। वेद, आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द पर वार-प्रहार का उत्तर देने में परोपकारिणी सभा सदैव अग्रणी रही है।

प्रियवर राहुल जी जो पुरानी सामग्री महर्षि के सम्बन्ध में खोज-खोज कर सभा को दे रहे हैं, उस पर प्रा. जिज्ञासु जी कार्य कर रहे हैं। उस शोध-कार्य का सुफल भी आर्यजनों को देखने को मिलेगा। **- जागृति विहार, मेरठ**

# अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

*प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ*- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

***अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।***

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

## अतिथि यज्ञ के होता

## ( १ से १५ फरवरी २०१६ तक )

१. कौशल किशोर पाण्डे, गाजियाबाद, उ.प्र. २. श्री देवमुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्री किशोर काबरा, अजमेर ५. श्री अनिल कुमार/श्रीमती प्रभा मंधना, किशनगढ़, राज. ६. श्री दर्शन कुमार कुकरेजा, नई दिल्ली ७. श्रीमती सरोज कुकरेजा, नई दिल्ली ८. श्रीमती सुनीता बुद्धिराजा, नई दिल्ली ९. श्री माँगीलाल गोयल, अजमेर १०. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ११. आर्य समाज पटियाला, पंजाब १२. श्री आयुष चौधरी, अजमेर १३. श्री असीम रावत, गाजियाबाद, अजमेर १४. श्री अशोक कुमार गुप्ता/श्रीमती सुधा गुप्ता, नई दिल्ली १५. श्री रामचन्द गोयल, सूरत, गुजरात १६. श्री नवीन पाराशर/श्रीमती सोनाली पाराशर, अजमेर १७. श्रीमती हेमलता अग्रवाल, गाजियाबाद, उ.प्र. १८. श्री गौरव शर्मा, गुडगांव, हरियाणा १९. श्रीमती कमला देवी बद्रीप्रसाद पंचौली, अजमेर २०. श्रीमती रश्मि कोरानी, अजमेर २१. श्री अमित माहेश्वरी/श्रीमती सुमन माहेश्वरी, ठाने, महाराष्ट्र २२. श्री अनुज नारंग/श्रीमती रहिमा नारंग, कनाड़ा २३. श्री अनिल कुमार आर्य, बुलंदशहर, उ.प्र. २४. सुश्री यशोदा रानी सक्सेना, कोटा, राज.। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

## ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

## ( १ से १५ फरवरी २०१६ तक )

१. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. २. श्री मोहन चन्द, अजमेर ३. सुश्री अभिलाषा श्रीवास्तव, नई दिल्ली ४. श्री भोलाराम, अजमेर ५. श्रीमती चम्पा देवी, अजमेर ६. श्री कपिल सोनी, पाली, राज. ७. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ८. श्री ब्रजभूषण गुप्ता, पंचकुला, हरियाणा ९. श्री वेदप्रकाश, अजमेर १०. श्री हनुमान राम, नागौर, राज. ११. श्री विशाल कुमार, हिसार, हरियाणा १२. श्रीमती सीता देवी रावत, अहमदाबाद, गुजरात १३. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १४. श्री अलोक शर्मा, अजमेर १५. श्री राजेन्द्रसिंह सक्सेना, गाजियाबाद, उ.प्र. १६. सूबेदार करतार सिंह आर्य, रोहतक, हरि. १७. श्रीमती पुष्पा शर्मा, अजमेर १८. श्री धरपाल परमार, दिल्ली १९. श्रीमती ज्ञानवती आर्या, विजयनगर, राज. २०. श्रीमती सुभद्रा आर्या, विजयनगर, राज. २१. श्रीमती कमला देवी आर्या, विजयनगर, राज. २२. श्री कृष्ण गोपाल आर्य, विजयनगर, राज. २३. श्री वासुदेव आर्य, विजयनगर, राज. २४. श्रीमती फूल कँवर आर्या, वियजनगर, राज. २५. श्री कन्हैयालाल आर्य, विजयनगर, राज. २६. श्रीमती सुशीला आर्या, विजयनगर, राज. २७. श्रीमती विमला परिहार, विजयनगर, राज. २८. श्रीमती अलका आर्या, विजयनगर, राज. २९. श्रीमती लीला कुमावत, विजयनगर, राज. ३०. श्री जगदीश आर्य, विजयनगर, राज. ३१. श्री मदन सिंह आर्य, विजयनगर, राज. ३२. श्रीमती वर्षा आर्या, विजयनगर, राज. ३३.श्री रिकब, विजयनगर, राज. ३४. श्री बलवीर सिंह तँवर, दिल्ली ३५. श्री दीपक सिंह, अजमेर ३६. श्री जगदीश चन्द यादव, अजमेर ३७. श्री डी.एस. राठौड़, अजमेर ३८. श्री उत्तम बीदला, अजमेर ३९. दुर्गाशंकर, अजमेर ४०. श्री पवन कुमार, सरूरपुर, उ.प्र. ४१. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर ४२. कै. श्री चन्द्रप्रकाश त्यागी / श्रीमती कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ४३. श्री नरेश कुमार गुप्ता, कोलकाता, पं. बंगाल ४४. श्रीमती कमला देवी बद्रीप्रसाद पंचौली, अजमेर ४५. श्री कमलेश पुरोहित, अजमेर ४६. श्रीमती तरूणा गहलोत, अजमेर। **- परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

# ऋषि मेला २०१५ दानदाता सूची

२०१. श्री गोवर्धनप्रसाद खण्डेलवाल, अजमेर २०२. श्री स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर २०३. श्रीमती श्याम कँवर गोयल, सूरत २०४. श्री इन्दुभूषण अबरोल, जयपुर, राज. २०५. डॉ. अशोक शारदा, अजमेर २०६. श्री जतनचन्द, अजमेर २०७. श्री योगेश गुप्ता, अजमेर २०८. श्री किरोड़ीमल गुप्त, अजमेर २०९. श्री बलदेव शर्मा, अजमेर २१०. श्री सुभाष देव गुप्ता, अजमेर २११. श्री वी. करुप्पाकर रेड्डी, मलकागिरी २१२. श्री राजेन्द्र सिंह आर्य, रोहतक, हरियाणा २१३. श्री रमेश दत्त झा, अजमेर २१४. श्री रामलाल अरोड़ा, अजमेर २१५. श्री बच्चानी, अजमेर २१६. सेंचुरी स्टोन प्रा.लि. अजमेर २१७. श्री नरेन्द्र कुमार, हेमूलकुमार गंगवाल, किशनगढ़, राज. २१८. खेमानी मार्बल्स, किशनगढ़, राज. २१९. ठा. विक्रम सिंह, नई दिल्ली २२०. श्री आनन्दमुनि, लातुर, महाराष्ट्र २२१. श्रीमती सुशीला आर्या, दिल्ली २२२. आर्यसमाज, विजयनगर, राज. २२३. लोकपाल आयुर्वेदिक एक्यूप्रेशर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड २२५. श्री हरिकिशन आर्य, जीन्द, हरियाणा २२६. श्री विजयकुमार सोनी, अजमेर २२७. श्री अनिल/श्रीमती अनिता शर्मा, अजमेर २२८. श्री रामसेवक आर्य, कानपुर, उ.प्र. २२९. श्री चन्द्रपाल सिंह, अलीगढ़ २३०. प्रधान, आर्यसमाज, नईदिल्ली २३१. आर्यसमाज, न्यू मुम्बई, महाराष्ट्र २३२. श्री वीरप्रकाश तापड़िया, अजमेर २३३. श्री सत्या देवान, न्यू मुम्बई, महाराष्ट्र २३४. श्री अमृतपाल, नई दिल्ली २३५. श्री विपिन कुमार बाबूराम, नाँगल २३६. श्री समवेव, अजमेर २३७. श्री कंवरसिंह गुलिया, रोहतक, हरियाणा २३८. श्री रनवीर सिंह, रोहतक, हरियाणा २३९. आर्यसमाज,रोहतक, हरियाणा २४०. श्री घीसालाल सेवाराम, प्रतापगढ़, राज. २४१. श्री आर.सी.चन्देल, विदिशा, म.प्र. २४२. श्री राजेश/श्री राकेश लखनपाल, मुम्बई २४३. श्री फंटूशअनमोल लखनपाल, मुम्बई २४४. श्री केवल सिंह चन्द्रवंशी २४५. श्री जयपाल खेड़ी, झामर २४६. श्री संतोष आर्य, मेरठ, उ.प्र. २४७. श्री पवन टिक्कीवाल, जयपुर, राज. २४८. श्री रामलाल, हंसराज प्रजापत, चुरु, राज. २४९. श्रीमती ललिता गुप्ता, जयपुर, राज. २५०. श्री यदुनंदन आर्य, जहानाबाद, बिहार २५१. महिला आर्य समाज, जयपुर, राज. २५२. स्वामी भजनानन्द संन्यासी २५३. श्री विजय सिंह गहलोत, अजमेर २५४. श्री किशनसिंह गहलोत, अजमेर २५५.श्री चन्दालाल कटारिया, किशनगंज २५६. आर्यसमाज, किशनगंज, राज. २५७. श्री लक्ष्मीनारायण नागर, बारान, राज. २५८. विमलाबेन देवशंकर जोशी, चन्दीसर, २५९. डॉ. विमला देवी सुग्रीव, परली बैजनाथ २६०. श्रीमती सावित्री देवी उग्रसेन राठौड़, बीड़ बैजनाथ, महाराष्ट्र २६१. श्री गिरीश कुमार मेहता, गुडगांव २६२. श्री महेन्द्र प्रताप मनोचा, पानीपत, हरियाणा २६३. श्री विनोद मेहता, गुडगांव २६४. श्री दीपक भाटिया, गुडगांव २६५. श्री बलवान शास्त्री, रेवाड़ी, हरियाणा २६६. श्री महेन्द्र सिंह आर्य, भिवानी, हरियाणा २६७. श्री केशव सिंह, मुरैना २६८. श्री प्रथमेश कुमार शास्त्री, हनुमानगढ़ २६९. सुराणा एजेन्सीज, ब्यावर, राज. २७०. श्री भंवरलाल खींचा, ब्यावर, राज. २७१. गंधार टेक्सटाइल, ब्यावर, राज. २७२. श्री गणेशदास, राजन्द्र कुमार पोखरणा, ब्यावर, राज. २७३. श्री कमल के. अग्रवाल, नई मुम्बई २७४. श्रीमती अंजना आर्या, नई मुम्बई, महाराष्ट्र २७५. श्री कमलेश, नई मुम्बई २७६. श्री स्वरूप दोशी, ब्यावर, राज. २७७. मै. एस.डी. पावरलूम, ब्यावर, राज. २७८. मै. काकाणी टैक्सटाईल, ब्यावर, राज. २७९. मै. काबरा सिल्क स्टोर, ब्यावर, राज. २८०. श्री एम.एल.गोयल, अजमेर २८१. श्री हरीश मदान, करनाल २८२. श्री सुरजीत, कुंजपुरा २८३. आचार्य अन्डे गंगाराम, निजामाबाद २८४. श्री पृथ्वीराज सिंह, बहराईच २८५. श्रीमती कमला तँवर, अजमेर २८६. श्री मदनलाल आर्य, ग्वालियर, म.प्र. २८७. श्री हीरा सिंह आर्य, भरतपुर, राज. २८८. श्री जगदेव सिंह आर्य, मेरठ २८९. ब्रजभूषण शर्मा, मेरठ, उ.प्र. २९०. श्रीमती विमाला देवी, फरीदाबाद २९१. श्री रामलाल धमीजा, मुहाली २९२. श्री विश्म्बरदयाल पटेल, जयपुर, राज. २९३. श्री नन्दकिशोर आर्य, नसीराबाद, राज. २९४. आर्यसमाज नसीराबाद २९५. श्री जयनारायण, गुडगांव २९६. श्री ओमप्रकाश आर्य, शाहजहाँपुर २९७. श्रीमती मैना देवी, अजमेर २९८. श्रीमती रतनदेवी बंशीधर अग्रवाल ट्रस्ट, अहमदाबाद २९९. श्रीमती कृष्णा ठुकराल, नई दिल्ली, ३००. आर्यसमाज फरीदाबाद, हरियाणा

# वेद प्रचारार्थ मेरी केरल यात्रा

- आचार्य सत्येन्द्रार्य

मनुष्य एक ऐसा चिन्तनशील प्राणी है, जिसे अपने हिताहित के सम्बन्ध में विचार करने की वैचारिक स्वतन्त्रता स्वस्फूर्त है। इस वैचारिक स्वतन्त्रता के प्रवाह को कोई भी शासक या कानून भले ही कुछ समय के लिए बाह्य रूप से दबा दे या अवरुद्ध कर दे, यह हो सकता है और ऐसा हुआ है कि बाहरी दृष्टि से स्वतन्त्र विचार करने वालों पर रोक लगाई गई, पुनरपि आन्तरिक चिन्तन-मनन की इस नैसर्गिक स्वतन्त्रता को बाहरी बाधाएँ छीन नहीं सकती। इसी प्रकार यात्रा भी मनुष्य के स्वतन्त्र चिन्तन का ही एक अनिवार्य उपक्रम है। मानव जीवन अपने-आप में एक यात्रा ही है, जिसमें कर्त्तव्य पालन करते हुए हमें क ई पड़ावों को पार करना पड़ता है। अपनी ऐसी एक यात्रा का प्रारम्भ मैंने अजमेर ऋषि उद्यान से किया और लक्ष्य था केरल के हरे-भरे प्रदेश। आचार्य वामदेव जी, जो ऋषि उद्यान के योग्य स्नातकों में से एक हैं, उनमें वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अहर्निश लग्न देखकर लगा कि मुझे भी विश्व कल्याण के इस महायज्ञ में कुछ आहुतियाँ समर्पित करनी चाहिए। आमन्त्रण था वामदेव जी का जो मुझे कुछ मास पूर्व ही मिल गया था, वह आमन्त्रण भी विशेष रूप से इस बात को ध्यान में रखकर दिया गया था कि केरल में महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा का बीज वपन हो और ऋषि मिशन का काम गति पकड़े।

१८ दिसम्बर २०१५ को प्रात:काल अजमेर से आरम्भ होने से लेकर यह यात्रा शोरनूर जो केरल के अन्तर्गत है, तक लगभग दो दिन में पूरी हुई। यात्रा लम्बी किन्तु उबाऊ न थी, क्योंकि अपने अगल-बगल की सीटों पर बैठे लोगों से स्नेह पूर्वक वार्ता करने से आनन्द का अनुभव हो रहा था। यात्रा करते-करते २० तारीख की रात्रि को लगभग डेढ़ बजे शोरनूर पहुँचे और वहाँ से वामदेव जी के साथ कारलमन्ना, जहाँ कार्यक्रम रखा गया था, वहीं मेरे ठहरने आदि की व्यवस्था भी की गई थी- लगभग एक घण्टे में पहुँच गया था। २० दिनांक की प्रात:काल उपनयन संस्कार का कार्यक्रम रखा गया था, जो पूर्व निर्धारित था। उपनयन संस्कार कराने वालों के मन में संस्कार के प्रति अत्यन्त श्रद्धा व निष्ठा को दृढ़ता से बिठा दिया गया, इसके कारण ही वे सभी लोग जो संस्कार कराने के इच्छुक थे, उन्होंने एक दिन केवल दूध पर ही निकाल दिया था। इसी से उनकी संस्कार के प्रति श्रद्धा व दृढ़ निष्ठा का पता लगता है। यज्ञोपवीत संस्कार के समय जो लोग दर्शक के रूप में वहाँ उपस्थित थे, वे भी बड़ी प्रसन्नता से इस संस्कार का आनन्द ले रहे थे। विधिपूर्वक यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

२३ दिसम्बर २०१५ से शिविर का प्रारम्भ और गुरुदत्त भवन तथा उपदेशक विद्यालय का उद्घाटन- उपरोक्त कार्यक्रम के लिए २३ दिसम्बर का दिन चुना गया। आर्य जगत् में यह बात सब आर्यजनों को विदित है कि २३ दिसम्बर १९२६ को श्रद्धेय श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक धर्मान्ध मुस्लिम द्वारा, जिसका नाम अब्दुल रशीद था, गोलियाँ चलाकर उस अवस्था में जब वे रुग्ण शय्या पर पड़े थे, हत्या कर दी गई थी। देश धर्म पर अपना सब कुछ वार देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द के इस अभूतपूर्व बलिदान को आर्यजन विस्मृत न कर दें, इसलिए उपरोक्त कार्यक्रम के आरम्भ व उद्घाटन का २३ दिसम्बर दिन निश्चित किया गया था। लगभग १० बजे ध्वजारोहण 'वन्दे मातरंम् और जयति ओम् ध्वज...' के गीतों से बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में किया गया। ध्वजारोहण के समय वहाँ अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति से कार्यक्रम भव्य रूप में मनाया गया। उपदेशक विद्यालय के साथ-साथ त्रिदिवसीय शिविर की भी उद्घोषणा कर दी गई थी, कुछ ही देर बार शिविर की कक्षाएँ भी प्रारम्भ कर दी गईं।

शिविर समापन समारोह के अवसर पर श्री एम.के. राजन जी जो बहुत ही उत्साही और लग्नशील व्यक्तियों में से एक हैं, ने विद्यालय का उद्देश्य और उद्देश्य की पूर्ति के लिए कई प्रकार की योजनाएँ रखीं, उन योजनाओं में गौशाला और यज्ञशाला निर्माण भी है। इनके निर्माण की ओर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित किया गया। इसका सभी ने समर्थन किया। अनेक लोग इस संस्था से जुड़ गए हैं, जुड़ रहे हैं, सम्भावना है कि शीघ्र ही यह विद्यालय आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का एक अच्छा-खासा केन्द्र बनेगा। केरल की देवभूमि में आर्य समाज का बीज तो बो दिया है, अब इस बीज की सुरक्षा हम सभी आर्यों को करनी चाहिए। इसे किसी मनुष्य का कार्य न मानकर वेद भगवान का कार्य है, ऐसा ध्यान में रखकर उसे वृक्ष का रूप प्रदान करना हम सब आर्यों का नैतिक कर्त्तव्य है।

इस प्रकार केरल की यह धर्म प्रचार यात्रा अजमेर से आरम्भ होकर अजमेर आकर समाप्त हुई।

**- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।**

# जिज्ञासा समाधान - १०६

- आचार्य सोमदेव

**जिज्ञासा**- आदरणीय आचार्य जी, नमस्ते। निवेदन है कि आपके स्तर से परोपकारी पत्रिका के माध्यम से जिज्ञासा समाधान के अन्तर्गत समाज के विभिन्न जागरूक सदस्यों की जटिल जिज्ञासाओं का सटीक एवं सन्तुष्टिकारक समाधान किया जाता है, जिसके लिये हम आपके आभारी है। कृपया, पत्रिका के माध्यम से हमारी निम्नांकित जिज्ञासाओं का युक्तियुक्त समाधान देने की कृपा करें-

**( क )** हवन (अग्निहोत्र/होम) में दो आघाराहुतियाँ दी जाती हैं, पहली 'ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम।' यज्ञ कुण्ड के उत्तर भाग में तथा दूसरी 'ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम।' यज्ञ कुण्ड के दक्षिण भाग में दी जाती है।

जिज्ञासा यह है कि ये आहुतियाँ पूर्व या पश्चिम दिशा में अथवा यज्ञ कुण्ड के मध्य भाग में क्यों नहीं देनी चाहिये?

**( ख )** अंजली में जल लेकर जल प्रसेचन हेतु पहले मन्त्र से यज्ञ वेदी की पूर्व दिशा में, दूसरे मन्त्र से पश्चिम दिशा में तथा तीसरे मन्त्र से उत्तर दिशा में जल सींचते हैं। इस प्रकार दक्षिण दिशा जल सिंचन से शेष रह जाती है। दक्षिण दिशा में जल तभी सींचा जाता है, जब अगले मन्त्र '**ओ३म् देव सवितः.... नः स्वदतु।**' को बोलकर वेदी के चारों ओर जल प्रसेचन किया जाता है।

जिज्ञासा यह है कि प्रथम बार में दक्षिण दिशा क्यों छोड़ दी जाती है?

उपरोक्त के अतिरिक्त यह भी जिज्ञासा है कि दैनिक कर्म विधि सम्बन्धित पुस्तकों के कतिपय लेखकों ने जल प्रसेचन की प्रक्रिया निम्नानुसार सम्पन्न करने हेतु निर्देशित किया है:-

पूर्व में दक्षिण से उत्तर की ओर,
पश्चिम में दक्षिण से उत्तर की ओर तथा
उत्तर में पश्चिम से पूर्व की ओर

जल प्रसेचन करना चाहिये- ऐसा विधान क्यों किया गया है?

**- आर.पी. शर्मा, मन्त्री, आर्य समाज नई मण्डी, दयानन्द मार्ग, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.**

**समाधान- ( क )** यज्ञ कर्म कर्मकाण्ड का विषय है। यज्ञ कर्म में अनेक क्रियाएँ ऐसी हैं, जिनका सीधा-सीधा प्रयोजन हमें ज्ञात नहीं हो पाता। इस विषय में महर्षि दयानन्द का भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। हाँ, सूत्रात्मक रूप से संक्षेप में ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है, उसको हम कितना समझ पाते हैं, यह हमारे विवेक पर निर्भर करता है।

आपके प्रश्न भी इसी विषय को लेकर हैं। हमने यहाँ जो विद्वानों ने संगति लगाने का प्रयास किया है, उसको लिखते हैं। पहला जो प्रश्न आपका है, उसके विषय में महर्षि दयानन्द ने दिशा निर्देश नहीं किया है, वहाँ तो यज्ञकुण्ड के उत्तर भाग, दक्षिण भाग का निर्देश है। यजमान के बैठने के दो स्थान कहे हैं, यजमान या तो पश्चिम में पूर्वाभिमुख बैठे अथवा दक्षिण में बैठ उत्तराभिमुख रहे। पहली स्थिति में तो यदि सूर्य आधार वाली दिशा लेंगे तो उत्तर-दक्षिण ठीक बनता है, किन्तु यदि दूसरी स्थिति दक्षिण में बैठ उत्तराभिमुख है, तो उत्तर-दक्षिण न होकर पश्चिम-पूर्व बनेगा। इन दिशाओं का निरूपण तो हमने कर लिया है, पर महर्षि ने तो यज्ञकुण्ड का उत्तर-दक्षिण भाग कहा है।

महर्षि दयानन्द ने जो यजमान के बैठने का विधान किया है, शास्त्र के आधार पर किया है। यज्ञ कर्म में जो अभिधारण क्रिया की जाती है, वह पश्चिम से पूर्व मुख वा उत्तराभिमुख होने पर ही हो पाती है। आपने जो पूछा कि इन दो आहुतियों को मध्य भाग में क्यों नहीं दे देते, तो इसका सामान्य-सा उत्तर तो यह है कि इसका निर्देश मध्य में न करके उत्तर-दक्षिण भाग में किया है, इसलिए मध्य भाग में नहीं देते।

अब जो कुछ अन्य विद्वानों ने इस विषय में कहा, वह लिखते हैं- ''प्रकाश देने वाली प्रधानतया चार वस्तुएँ संसार में हैं- अग्नि, सोम, प्रजापति और इन्द्र। अग्नि तत्त्व उत्तर में और सोम दक्षिण में है, अत: उत्तरायण में सूर्य अधिक प्रचण्ड और दक्षिणायन में अल्प ताप वाला होता है। प्रजापति अर्थात् सूर्य और इन्द्र, अर्थात् विद्युत् के लिए कोई दिशा निर्दिष्ट नहीं की जा सकती, अत: यज्ञकुण्ड के मध्य में आहुति दी जाती है।'

प्रजापति= पालन-पोषण करने वाला गृहस्थ बाहर से सामान लाकर घर के मध्य में डालता है। इन्द्र= राजा राष्ट्र का केन्द्र है, अत: ये दोनों आहुतियाँ मध्य में डाली जाती है।'' आचार्य विश्वश्रवा (यज्ञपद्धति मीमांसा)

''यज्ञरूप यह जगत् 'अग्निषोमात्मकं जगत्' शतपथ ब्राह्मण के इस वचन के अनुसार अग्निषोमात्मक है, अर्थात् शुष्क और आर्द्र, इन दो भागों में बँटा हुआ है। हमारा यह यज्ञ इस विश्व ब्रह्माण्ड रूप यज्ञ की अनुकृति मात्र है। यह भी अग्नि तथा सोमात्मक है। इसमें भी आधा सूखा और आधा गीला है। समिधाएँ सामग्री सूखी हैं तो घृत तथा पायस आदि गीले हैं। सूखा सब आग्नेय है और गीला सब सोमात्मक है। इस प्रकार ये दोनों आहुतियाँ विश्वब्रह्माण्ड में चल रहे ईश्वरीय यज्ञ और हमारे यज्ञ में अभिरूपता-एकरूपता सम्पादन के लिए दी जाती है।

.......नेत्र सम्बन्धी बात को यों कहा है कि 'अग्निषोमाभ्यां यज्ञश्चक्षुमान्' अर्थात् अग्नि और सोम से यज्ञ चक्षुमान् है। इसी प्रकार अग्निषोमयोरहं देवयज्यया चक्षुमान् भूयासम्।। - तै.स. १.६.२.३

अर्थात्- अग्नि और सोम इन दोनों के यजन से मैं चक्षुमान् हो जाऊँ। इस भाग में इन आहुतियों द्वारा यजमान् अग्नि और सोम के समान चक्षुष्मान् होने की कामना से ये दो आज्यभागाहुतियाँ देता है।

इस प्रकार (१) विश्वब्रह्माण्ड में चल रहे यज्ञ के साथ अपने इस यज्ञ की अभिरूपता के लिए (२) मनुष्यों की आँखों की भाँति यज्ञ के दोनों नेत्रों के रूप में तथा (३) अग्नि और सोम के तुल्य तेज और सौम्यतायुक्त नेत्रों की प्राप्ति की कामना से ये दो आज्यभागाहुतियाँ दी जाती हैं।

रही बात उत्तर और दक्षिण दिशा की। इसके लिए पहली बात आप यह ध्यान में रखें कि देवयज्ञ में प्रत्येक क्रिया प्रदक्षिणक्रम से की जाती है तथा यज्ञानुष्ठान के लिए यजमान् पूर्वाभिमुख बैठता है। इस अवस्था में प्रदक्षिणक्रम से यज्ञानुष्ठान करते समय यज्ञ की चक्षुस्थानीय पहली आहुति उत्तर में ही देनी होगी और दूसरी दक्षिण में। इन आहुतियों का उत्तर और दक्षिण दिशा से सम्बन्ध नहीं है, अपितु ये अग्नि और सोम की दो आहुतियाँ यज्ञ (कुण्ड) के वाम (उत्तर) और दक्षिण नेत्र के रूप में दी जाती हैं, क्योंकि नासिका सामने होती है और दोनों आँख-नाक उत्तर और दक्षिण दिशा में होते हैं। यज्ञ की नेत्रस्थानीय होने से ये दोनों आहुतियाँ कुण्ड के मध्यभाग से उत्तर और दक्षिण दिशा में दी जाती हैं। इन आहुतियों के उत्तर और दक्षिण दिशा में देने का यही एकमात्र कारण है।'' - स्वामी मुनिश्वरानन्द जी (शंका-समाधान)

इस प्रसंग में जैसा स्वामी दयानन्द का कथन है कि यज्ञकुण्ड के उत्तर-दक्षिण भाग में आहुति दें, वैसा ही स्वामी मुनिश्वरानन्द जी ने माना और हमारा भी यही मानना है।

**(ख)** पूर्व में भी बताया कि यज्ञ कर्म क्रिया पूर्व और उत्तर की ओर होती है, अर्थात् पश्चिम से पूर्व और दक्षिण से उत्तर। यह प्रक्रिया ब्राह्मण ग्रन्थ में कही है-

''**प्राञ्च्युदञ्चि वा कर्म्माण्यनुतिष्ठेरन्।।**'' जल प्रसेचन में भी इसी नियम का पालन किया है। पहले पूर्व की दिशा में दक्षिण से उत्तर जल प्रसेचन, फिर पश्चिम दिशा में दक्षिण से उत्तर, पश्चात् उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर सिंचन, अन्त में उत्तर और पूर्व के कोने से प्रारम्भ कर दक्षिण दिशा में सेचन करते हुए उसी स्थान पर पूर्ण करना जहाँ से चारों ओर जल सेचन प्रारम्भ किया था। ऐसा करने पर ही शास्त्र के अनुसार सेचन होगा, अन्यथा क्रिया शास्त्रानुसार न होगी। आपने जो पूछा ऐसा विधान क्यों कर रखा है, तो इसका तो यह उत्तर हो गया।

अब आपकी इस बात पर विचार करें कि दक्षिण दिशा क्यों छोड़ दी? एक दृष्टि से देखें तो दक्षिण दिशा को

भी छोड़ा नहीं है, सेचन तो वहाँ भी हुआ है। फिर भी जिस दृष्टि से छोड़ना दिख रहा है, उसको देखते हैं। यहाँ तीन दिशाओं के लिए एक-एक मन्त्र है, किन्तु चौथी दिशा के लिए पृथक् मन्त्र न होकर चारों दिशाओं के लिए सामान्य मन्त्र दिया है। यहाँ देखने की बात यह है कि अपने यहाँ तीन बार को बहुलता का प्रतीक माना है, तीन बार पूर्ण आहुतियाँ, तीन बार आचमन, तीन समिधाएँ आदि-आदि। यहाँ भी तीन मन्त्रों को बहुलता का प्रतीक मानेंगे तो यह विचार नहीं बनेगा कि चौथी दिशा क्यों छोड़ दी और चौथी दिशा में जल सेचन तो हुआ ही है।

पाठकों को दृष्टि में रखते हुए यह भी यहाँ लिखते हैं कि जल सेचन का उद्देश्य क्या है? ''यजुर्वेद २३.६२ के अनुसार यज्ञ इस भुवन की नाभि, बीच है, केन्द्र है। इसके चारों ओर जल छिड़कने का अर्थ हमारी यह घोषणा है कि जैसे जल पवित्र है, शान्तिप्रद है, सुखदायक है, भेषज है, इषुरूप और जग के लिए जीवन दाता है, वैसे ही यह अग्निहोत्र भी जगत् के लिए पवित्रकारक, शान्तिदायक, सुखदायक, औषधरूप, रोगनिवारक, वर्षा के द्वारा प्रजा की दुर्भिक्ष से रक्षा करने वाला और औषधि, वनस्पति एवं समूचे प्राणिजगत् का जीवनदाता है। इस प्रकार जल के साम्य से यज्ञ की सर्वोत्कृष्टता को घोषित करना ही जल सिंचन का उद्देश्य है। जैसे जल अपनी विविध शक्तियों से जगत् का रक्षक है, वैसे ही यज्ञ भी अपनी विविध शक्तियों से जगत् का रक्षक है....।'' स्वामी मुनिश्वरानन्द जी और भी-

१. '' ......जीव जन्तु यज्ञाग्नि के पास न पहुँचने पावें।

२. दूसरा कारण यह है कि यज्ञ की आहुतियाँ लगाने पर कुछ ऐसी गैसें भी पैदा होती हैं, जिनका समीपस्थ जल में शान्त होना आवश्यक है।

३. तीसरा कारण यह है कि हमने अग्न्याधान के मन्त्र से यज्ञ को भूः भुवः स्वः का रूप दिया, अर्थात् तीनों लोकों का स्वरूप माना है। ब्रह्माण्ड में प्रकाश लोक अर्थात् द्युलोक और पृथिवीलोक के बीच में जल का मार्ग है, अतः यज्ञकुण्ड में जलती हुई अग्नि को प्रकाश लोक मानो और जहाँ पृथिवी पर यजमान बैठा है, उसे पृथिवी लोक मानो, तब उन दोनों के मध्य जल का मार्ग दिखाना आवश्यक है।

४. पृथिवी के बीच भी भौम अग्नि रहती है और पृथिवी के चारों ओर पानी भरा है, अतः पृथिवी रूप यज्ञकुण्ड के गर्भ में भौम अग्नि के रूप में यज्ञाग्नि है और पृथिवी रूप यज्ञकुण्ड के चारों ओर जल दिखाना है।'' - आचार्य विश्वश्रवा

इन सब में जो युक्तियुक्त और ठीक संगति लगती हो, उसको ग्रहण कर लें और जो उचित न लग रही हो, उसको विचार कर ठीक कर लें या छोड़ दें। अस्तु।

**- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर**

# स्तुता मया वरदा वेदमाता-२९

**मम पुत्राः शत्रुहणाऽथो मे दुहिता विराट्**

**तीसरा मन्त्र** परिवार के सदस्यों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाल रहा है। इसकी प्रथम पंक्ति में अपने पुत्र और पुत्रियों की क्या योग्यता है? परिवार में उनका क्या स्थान है?- यह इन शब्दों से प्रकाशित होता है। मेरे पुत्र शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ हैं तथा पुत्रियों का व्यक्तित्व विशाल है। उनका प्रभाव क्षेत्र विस्तृत है। आज परिवार में सन्तान तो होती है, परन्तु सभी को अपनी सन्तानों पर गर्व करने का अवसर नहीं मिलता। विशेषकर आज की परिस्थिति में हमारा संकट है- हम उत्साह से सन्तान का पालन-पोषण तो करते हैं, पर सन्तान के बड़े होने पर हमें उतनी ही निराशा हाथ लगती है।

मनुष्य के साथ यह स्वाभाविक नहीं है कि वह सन्तान से प्रेम करता है तो सन्तान भी उससे प्रेम करे। बचपन में बालक माता पर निर्भर रहता है, माँ उस पर समर्पित रहती है। यह परिस्थिति समय के साथ बदलने लगती है। बालक जब परिवार और समाज के दूसरे लोगों के सम्पर्क में आता है, तब उसके उनसे सम्बन्ध बनने लगते हैं, तब तक वह घर से बँधा रहता है। बालक घर से दूर होता जाता है तो उसका बन्धन शिथिल होता जाता है, परन्तु माता-पिता का

मोह उसे बाँधे रखने के लिये व्याकुल रहता है। धीरे-धीरे यह स्थिति माता-पिता के लिये कष्टप्रद होने लगती है। विशेषकर जब माता-पिता अपनी सन्तानों का विवाह कर देते हैं, तब स्थिति विकट हो जाती है। पुराने सम्बन्ध अपने अधिकार छोड़ने के लिए तत्पर नहीं होते, वहाँ नये अधिकार उसे जकड़ने लगते हैं। परिवार में संघर्ष की स्थिति बन जाती है।

सन्तान के लिये मोह तो पशुओं में भी होता है, परन्तु जब तक सन्तान उन पर निर्भर रहती है, तभी तक उनका अपनी सन्तान से मोह होता है, उसके बाद वे अपरिचित हो जाते हैं। यह उनकी प्राकृतिक स्थिति है, बाकि तो वे मनुष्य के अधीन होते हैं, जैसा वे चाहें, उन्हें रखे। मनुष्य का मोह यथावत् जीवनभर बना रहता है। इसका उपाय उसे बुद्धि से करना पड़ता है। जब तक कर्त्तव्य का भाव रहेगा, तब तक मनुष्य निर्भय रहेगा, परन्तु मोह का भाव रहेगा, तो हर समय भयभीत रहेगा। माता-पिता अपना अधिकार न मानकर कर्त्तव्य समझें तो उनको कभी सन्तान से दु:ख नहीं होगा, न अपने किये पर पश्चात्ताप होगा, न सन्तान के किये की पीड़ा होगी।

सन्तान को यदि माता कर्त्तव्यनिष्ठ बनाने का प्रयास करे तो उनको भी सन्तान की ओर से दु:खी होने के अवसर नहीं आयेगा। इस मन्त्र में एक माता अपने कर्त्तव्य पालन की घोषणा कर रही है। मेरा पुत्र शत्रुओं का नाश करने में समर्थ है, वे शत्रु चाहें आन्तरिक हों अथवा बाह्य। माँ ने अपने बालक को इतना समर्थ बनाया है कि वह अपने आन्तरिक और बाह्य दोनों प्रकार के शत्रुओं को अपने वश में करने में समर्थ है। शत्रुओं को अपने वश में करने की विद्या केवल बाहरी साधनों पर निर्भर नहीं रहती। बाहरी नियम और व्यवस्था से बाहर के शत्रुओं से लड़ा जा सकता है, परन्तु पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियों से लड़ाई आन्तरिक साधनों द्वारा ही लड़नी पड़ती है। हम अपने बच्चों को खिला-पिलाकर, महँगे कपड़े पहनाकर, ऊँचे मूल्य के विद्यालयों में पढ़ाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं, परन्तु आन्तरिक संघर्ष करने का सामर्थ्य अपने बच्चों में उत्पन्न नहीं कर पाते। यह संघर्ष आत्मिक गुणों के विकास के बिना सम्भव नहीं है। आज के युग में माता-पिता, समाज, सरकार किसी के पास भी आत्मा के विकास का विचार नहीं है। अधिकांश को तो इसकी कल्पना ही नहीं है, शेष के पास ऐसा करने का अवसर नहीं है। मनुष्य के अन्दर वह थोड़ा है, जो स्वाभाविक है, अधिकांश तो वह अर्जित है। कुछ वह अपने पुराने जीवन के संस्कारों से लेकर आता है, कुछ माता-पिता से प्राप्त करता है, शेष समाज से उसे मिलता है, अत: हम यदि अपनी सन्तान को अपने शत्रुओं पर विजय पाने में समर्थ बनाना चाहते हैं, तो हमें वैसी शिक्षा और वैसे ही संस्कार देने पड़ेंगे। मनुष्य सिखाने से सीखता है, मनुष्य देखकर सीखता है। परिवार में, समाज में वह अपने लोगों को जैसा करता हुआ पाता है, वैसा स्वयं सीख लेता है, बताने पर भी उसका विचार वैसा बनता है, अत: यह तो सब प्रयास करने से ही सम्भव है। यह प्रयास प्रथम माता-पिता को करना होता है फिर समाज और शिक्षक की भूमिका आती है।

आज हम अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा और संस्कार देने में असमर्थ पाते हैं, अत: यह घोषणा नहीं कर पाते हैं कि हमारी सन्तान अपने शत्रुओं को वश में करने में समर्थ है। वेद की माँ कहती है- मैंने माता के रूप में अपने पुत्रों को शत्रुओं पर विजय पाने में समर्थ बनाया है, इसलिये तो शास्त्र कहता है कि एक मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिये माता-पिता, आचार्य का योगदान होता है, अत: कहा गया है -

**मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।**
**स्वामी दयानन्द प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता यस्य।**

अर्थात् धार्मिक और विदुषी माता ही, ऐसे माता-पिता और आचार्य ही मनुष्य को योग्य बना सकते हैं।

क्रमश: .......

# वेद मन्त्र भावार्थ

-लालचन्द आर्य

आप परोपकारी के सभी अंकों में अनेक स्थानों पर महर्षि दयानन्द जी के वेद मन्त्रों के भावार्थ प्रकाशित करते हो, जिनसे पाठकों को ऋषि की विशेष मान्यताओं का बार-बार बोध होता रहता है। यह वेद प्रचार की एक उत्तम क्रिया है। मैं महर्षि दयानन्द के पाँच वेद मन्त्रों के भावार्थ परोपकारी में प्रकाशन के लिये भेज रहा हूँ, जिनके अध्ययन से वैदिक त्रैतवाद अर्थात् जीव, प्रकृति और परमात्मा के विषय में मेरी सभी शंकाओं का समाधन हो गया है। इन मन्त्रों के भावार्थ में ऋषि की विशेष मान्यतायें हैं-

**१. भावार्थ**- जो मनुष्य विद्या और अविद्या को उनके स्वरूप से जानकर, इनके जड़-चेतन साधक हैं, ऐसा निश्चय कर सब शरीरादि जड़ पदार्थ और चेतन आत्मा को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये साथ ही प्रयोग करते हैं, वे लौकिक दु:ख को छोड़ कर परमार्थ के सुख को प्राप्त होते हैं जो जड़, प्रकृति आदि कारण वा शरीरादि कार्य न हो तो परमेश्वर जगत् की उत्पत्ति और जीव कर्म, उपासना और ज्ञान के करने को कैसे समर्थ हों? इससे न केवल जड़ और न केवल चेतन से अथवा न केवल कर्म से तथा न केवल ज्ञान से कोई धर्मादि पदार्थों की सिद्धि करने में समर्थ होता है। - महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ४०-१४

**२. भावार्थ**- इस मन्त्र में उपमालंकार है। जैसे अग्नि के कारण सूक्ष्म और स्थूल रूप हैं, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी के भी हैं, वैसे सब उत्पन्न हुए पदार्थों के तीन स्वरूप हैं। हे विद्वन्! जैसे तुम्हारा विद्या जन्म उत्तम है, वैसा मेरा भी हो। -महर्षि दयानन्द, ऋग्वेद, भावार्थ- मं. १ सू. १६३ म. ४

**३. भावार्थ**- हे मनुष्यो! इस शरीर में दो चेतन नित्य हुए- जीवात्मा और परमात्मा वर्तमान है, उन दोनों में एक अल्प, अल्पज्ञ और अल्पदेशस्य है। वह शरीर को धारण करके प्रकट होता, बुद्धि को प्राप्त होता और परिणाम को प्राप्त होता तथा हीन दशा को प्राप्त होता, पाप और पुण्य के फल का भोग करता है। द्वितीय परमेश्वर ध्रुव निश्चल, सर्वज्ञ, कर्म फल के सम्बन्ध से रहित है, तुम लोग निश्चय करो। - महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. ६, सु. ९, म. ४ भावार्थ

**४. भावार्थ**-हे मनुष्यो! इस शरीर में सच्चिदानन्द-स्वरूप अपने से प्रकाशित ब्रह्म-द्वितीय, तृतीय-मन, चौथी- इन्द्रियाँ, पाँचवें- प्राण, छठा- शरीर वर्तमान है। ऐसा होने पर सम्पूर्ण व्यवहार सिद्ध होता है, जिनके मध्य में सबका आधार ईश्वर, देह, अन्तरण, प्राण और इन्द्रियों का धारण करने वाला और जीवादिकों का अधिष्ठान शरीर है, यह जानो। - महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. ६, सु. ९, म. ५ भावार्थ

**५. भावार्थ**- जो ज्ञानी धर्मात्मा मनुष्य मोक्षपद को प्राप्त होते हैं, उनका उस समय ईश्वर ही आधार है। जो जन्म हो गया- वह पहला और जो मृत्यु वा मोक्ष होके होगा- वह दूसरा, जो है वह तीसरा और जो विद्या वा आचार्य से होता है- वह चौथा जन्म है। यह चार जन्म मिलके एक जन्म, जो मोक्ष के पश्चात् होता है, वह दूसरा जन्म है। इन दोनों जन्मों के धारण करने के लिये सब जीव प्रवृत्त हो रहे हैं, यह व्यवस्था ईश्वर के अधीन है। - महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. १, सु. ३१, म. ७

**६. भावार्थ**- हे परमेश्वर और जीव! तुम दोनों में बल, विज्ञान तथा कर्मों की प्रेरणा एक साथ होते हैं। - महर्षि दयानन्द ऋग्वेद म. १, सु. १६, म. ४

**- म.नं. १२२३/३४, शीतल नगर, बागवाली गली, झज्जर रोड, रोहतक, हरि.-१२४००१**

# पुस्तक - परिचय

**पुस्तक का नाम** - वेद प्रतिष्ठा

**लेखक** - आचार्य सत्यजित्

**प्रकाशक**- वैदिक पुस्तकालय, दयानन्द आश्रम केसर गंज, अजमेर- ३०५००१

**पृष्ठ**- ३३४ **मूल्य** - १००/- रु. मात्र

समस्त ऋषियों ने वेद की प्रतिष्ठा को सर्वोपरि रखा है और वेद को स्वतः प्रमाण माना है। वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है, ईश्वर प्रदत्त होने से यह निर्भ्रम और पूर्ण ज्ञान है। वेद मानव मात्र के कल्याण का उपदेश करता है, क्योंकि सर्व कल्याणमय तो ईश्वर ही है, उसके द्वारा बताया गया ज्ञान भी कल्याणमय क्यों न होगा? वेद को मानव मात्र के हितार्थ ईश्वर ने आदि सृष्टि में उत्पन्न किया। आदि सृष्टि से लेकर जब तक मनुष्य समाज वेद के अनुसार अपने जीवन के चलाता रहा, तब तक मानव का आध्यात्मिक भौतिक विकास होता रहा, क्योंकि वेद ही एक ऐसा ज्ञान है, जिसमें सब प्रकार की सत्य विद्याएँ हैं। उन विद्याओं से व्यक्ति अपने अध्यात्म को चरम तक बढ़ा सकता है, ऐसे ही भौतिक विकास को भी चरम तक ले जा सकता है।

वेद स्वतः प्रमाण है, वेद को प्रमाणित करने के लिए किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, जैसे सूर्य को दिखाने के लिए किसी अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती। इतना सब होते हुए भी कुछ लोग वेद को ठीक से समझ नहीं पाते, वेद के न समझने में वेद दोषी नहीं है, अपितु वह व्यक्ति ही दोषी है, जो वेद की शैली को नहीं समझा पा रहा। उसके पीछे उसका अपना अज्ञान, हठ, स्वार्थ सिद्धि व नास्तिकपना हो सकता है।

आर्य समाज ऋषि की मान्यतानुसार वेद को सर्वोपरि मानता है, वेद के प्रति श्रद्धा रखता है। आर्य समाज में भी कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने को कहते तो आर्य समाजी हैं, किन्तु वेद के प्रति अन्यथा भाव रहते हैं। उनमें से दो व्यक्ति श्री उपेन्द्र राव व श्री आदित्य मुनि जी थे, दोनों वेद को न तो ईश्वर कृत मानते और न ही वेद को समस्त सृष्टि के लिए मानते। इन लोगों ने वेद पर लगभग १०० आक्षेप किये थे, जिनका उत्तर कुछ विद्वान् जैसे-तैसे देते रहे अथवा कुछ चुप रहे। जो विद्वान् जैसे-तैसे उत्तर देते रहे, उनसे ये दोनों चुप नहीं हुए, अपितु और अधिक मुखर होकर वेद के विरुद्ध बोलते-लिखते चले गये।

उपेन्द्र राव जी व आदित्य मुनि जी की बोलती तब बन्द हुई, जब परोपकारी पत्रिका में वेद व ऋषि के प्रति आगाध श्रद्धा रखने वाले, ऋषि के मन्तव्यों को जीवन में जीने वाले दर्शन शास्त्रों के मर्मज्ञ, साधनामय जीवन के धनी आचार्य श्री सत्यजित् जी ने ''चतुर्वेदविद् आमने-सामने'' लेख माला चलाकर उनके एक-एक प्रश्न का उत्तर देना प्रारम्भ किया। जब परोपकारी में इनको उत्तर दिये जाने लगे, तब ये दोनों बहाने बनाकर बचने लगे, आक्षेप न लगाकर अपने बचाव करने में भलाई समझने लगे। आचार्य श्री सत्यजित् जी की इन लेखमालाओं का प्रभाव यह हुआ कि वे दोनों इन उत्तरों की समालोचना तो दूर, अपनी रक्षा भी नहीं कर पाये। परोपकारी के ''चतुर्वेदविद् आमने-सामने'' लेखों से उन वेद प्रेमिओं को अपार सन्तोष हुआ जो इनके आक्षेपों से आहत होते रहते थे।

वेद प्रेमियों के लिए प्रसन्नता की बात यह है कि वेद पर किये गये जिन आक्षेपों के उत्तर आचार्य सत्यजित् जी ने दिये, वे उन सब आक्षेपों और उनके उत्तरों को इकट्ठा कर ''वेद प्रतिष्ठा'' नाम से पुस्तकाकार दे दिया है। इस पुस्तक में उपेन्द्र राव जी द्वारा किये गये १०० प्रश्नों में २८ प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं। पुस्तक में ३९ विषय व तीन परिशिष्ट हैं। पाठक इस पुस्तक को पढ़कर वेद की प्रतिष्ठा के गौरव को अनुभव करेंगे। यथार्थ में यह पुस्तक वेद को प्रतिष्ठित करने वाली मिलेगी।

पुस्तक में लेखक आचार्य ने अपने विचार रखे- ''पिछले कुछ दशकों से वेदों को अप्रतिष्ठित करने के प्रयास नये तरीके से किये, मूल आक्षेप तो पूर्ववत् ही थे। इनके समाधान भी किये गये, प्रवचनों, लेखों व पुस्तकों के माध्यम से ये समाधान प्रायः परम्परागत शैली में रहे। आक्षेपकों ने यह दुष्प्रचारित किया कि ये समाधान हमारे आक्षेपों का उचित समाधन करने में असमर्थ हैं। आक्षेपकों

ने दुराग्रहपूर्वक हठ कर रखी थी कि आक्षेपों के उत्तर मात्र वेद व तर्क युक्ति से दिया जाएँ, अन्य ग्रन्थों का प्रमाण उन्हें स्वीकार्य नहीं है। ऐसे में विचार हुआ कि क्यों न इन्हें इन्हीं की शैली में उत्तर दिये जाए। साथ ही इनकी इस शैली को इन पर भी लागू करके आक्षेपों की भी समालोचना की जाए। इन्हें इसका बोध कराया जाए कि तर्क-युक्ति की बातें करने वाले आप लोग अपने विचारों-निर्णयों-आक्षेपों में कितने अधिक तर्कहीन व अयुक्तियुक्त हो जाते हैं। उन्हें भी तर्क युक्ति के आधार पर अपने गिरेबान में झँकवाया जाए, अपने मुख को दर्पण में दिखवाया जाए।''

यह पुस्तक वेद की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए है, जिसे पढ़कर पाठक लेखक की वेद के प्रति श्रद्धा व उनकी बौद्धिक क्षमता का अनुभव करेंगे। विशेषकर यह पुस्तक वेद प्रेमियों को अत्यधिक रुचिकर लगेगी, वेद के प्रति अधिक श्रद्धा पैदा करने वाली लगेगी, वेद की शैली का परिचय कराने वाली मिलेगी। सुन्दर आवरण से युक्त, उत्तम छपाई व कागज युक्त यह पुस्तक प्रत्येक वेद प्रेमी के लिए पठनीय है। गुरुकुलों व पुस्तकालयों के लिए आवश्यक है। आशा है, इस पुस्तक को प्राप्त कर पाठक वेद की प्रतिष्ठा बढ़ाएँगे।**-आ. सोमदेव,ऋषि उद्यान,अजमेर**

---

# प्रतिक्रिया

'परोपकारी' पाक्षिक पत्रिका के जनवरी माह-द्वितीय अंक २०१६ में असहिष्णुता के सन्दर्भ में श्री धर्मवीर जी का सम्पादकीय लेख उत्कृष्ट, तथ्यपरक व चेतना जाग्रत करने वाली संकलित प्रस्तुति है। इस लेख में आरम्भ से अन्त तक सम्पूर्ण जानकारी का समावेश किया गया है। हमने इसकी फोटो प्रतिलिपि करवा कर वितरित भी की है। अन्य पाठकगण भी ऐसा कर सकते हैं। एक सुझाव है कि इस लेख को आप अन्य पत्रिकाएँ जैसे- पाञ्चजन्य, पाथेय-कण आदि में भेजें तो अनेक व्यक्ति यह जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

**- डॉ. रंजना जैन, रोहित हॉस्पिटल, जयपुर, राज.**

परोपकारिणी सभा का हृदय से धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने पाठकों की जिज्ञासा समाधान को एक सूत्र में पिरो कर एक पुस्तक का आकार दिया है और नाम भी अति सुन्दर दिया है- 'जिज्ञासा विमर्श'। इस पुस्तक से हमारे अपने परिवार के सदस्य, परिचित एवं कई अन्य भी लाभान्वित होंगे। शंकाएँ तो हम जैसे सामान्य जनों की होती ही हैं, जिनमें कोई संकोचवश पूछना नहीं चाहते तो कई शंकाओं को उठाना नहीं चाहते, लेकिन औरों के द्वारा उठाई शंकाओं के समाधान से लाभ उठा सकते हैं और उठाते भी हैं। जिज्ञासा विमर्श में अनेक शंकाओं का समाधान किया हुआ है, इसलिए यह सब के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

परोपकारी पत्रिका फरवरी प्रथम-२०१६ के अंक में प्रकाशित सम्पादकीय में परोपकारिणी सभा के संरक्षक श्री गजानन्द जी के विचारों को और उनकी सरलता और निरभिमानता, जो उनमें कूटकूट कर भरी हुई है, हमारे जैसे लोगों के लिए प्रेरणात्मक है। अभी तक साक्षात्कार रूप में ऐसे महानुभाव के दर्शन तो नहीं किए, परन्तु आपने जिस शैली में उनके व्यक्तित्व को उजागर किया है, मन में उनकी झलक पाने के लिए लालायित हो जाना स्वाभाविक ही है। ऐसे ही महानुभाव प्रकाश स्तम्भ होते हैं, क्योंकि उनके अपने जीवन में प्रकाश होता है, वे औरों को भी प्रकाशित करते हैं।

आज प्राय: सुनने को मिलता है कि आर्य समाज का कार्य शिथिल हो गया है, उसका वर्चस्व समाप्त हो गया है, इसका कारण भी है कि हमारी सभी आर्य समाजों में श्री गजानन्द जी जैसे व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का अभाव हो गया है। आर्य समाज के स्वर्णिम काल के लिए आर्य समाज के प्रधान, संरक्षक को जातिवाद, राजनीतिवाद, धनवाद, वर्गवाद के सभी रोगों से मुक्त होना ही चाहिए और साथ ही सभी सदस्यों को भी कर्मठ, निष्ठावान होकर तन-मन-धन से आर्य समाज की उन्नति में लग जाना चाहिए। **- राज कुकरेजा, करनाल, हरियाणा**

आदरणीय डॉ. धर्मवीर जी, सादर नमस्ते। 'परोपकारी' पत्रिका के कॉलम 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' का मैं नियमित पाठक हूँ। प्रो. जिज्ञासु जी की इस मेहनत व गवेषणा के लिए उन्हें बधाई कि इस आयु में भी इस श्रमसाध्य लेखन को आप कर रहे हैं। फरवरी द्वितीय-२०१६ के अंक में उन्होंने श्री ओममुनि जी के सुपुत्र के सुझाव पर लिखा की आर्य समाज के पुराने विद्वान्, संन्यासी, प्रचारक, लेखक आदि के बारे में प्रो. जिज्ञासु जी लिखना प्रारम्भ कर सकते हैं। अगर ऐसा हो तो अतिउत्तम व आर्य समाज के लिए ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायी होगा। किस मुसीबत, अभाव में आर्य समाज का काम हुआ, पता चलेगा। कृपया अवश्य ही करवाये। परोपकारी के यशस्वी सम्पादन के लिए आपको बधाई। **-श्री पाल बाहेती**

# संस्था - समाचार

०१ से १५ फरवरी २०१६

**यज्ञ एवं प्रवचन**- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। आर्यवीर-दल का प्रशिक्षण कार्यक्रम सुबह-शाम नियमित रूप से होता है, जिसमें जुडो-कराटे, लाठी चलाने का अभ्यास आदि कराया जाता है। इसमें नगर के युवा वर्ग और बालक भाग लेते हैं। प्रतिदिन प्रात:काल सरस्वती भवन प्रांगण में आसन-प्राणायाम आदि क्रियाएँ करायी जाती हैं।

प्रात:कालीन सत्संग में ऋग्वेद के वागाम्भृणी सूक्त के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए **डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि वागाम्भृणी का अर्थ दुनिया की सबसे बड़ी आवाज है, जिसे कोई भी सुन सकता है। बहरा भी सुन सकता है। स्वामी दयानन्द के अनुसार परमेश्वर का प्रत्यक्ष उसके गुणों द्वारा होता है। गुणों से गुणी का प्रत्यक्ष होता है। गुण और गुणी कभी अलग नहीं होते, सदा साथ रहते हैं। ईश्वर की वाणी उसका गुण है। उस गुण के द्वारा किया कथन गुणी का ही है। ''अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति।'' का अर्थ करते हुए बताया कि जो वेद में बताये ईश्वर की आज्ञा (प्रकृति के नियम) का पालन नहीं करते, वे नष्ट हो जाते हैं। यह सत्य बात सबको समझ लेनी चाहिए। संसार में कोई भी मनुष्य सृष्टि के नियमों के विरुद्ध चलकर सुखी नहीं रह सकता। ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाले नास्तिकों को भी प्रकृति के नियमों के अनुकूल चलना ही पड़ता है। उदाहरण के लिए शारीरिक नियम का पालन-भूख लगने पर भोजन करना, प्यास लगने पर पानी पीना, थकान होने पर विश्राम करना, प्रात:काल जागकर शौच, स्नान आदि करना आवश्यक है। इसके बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। विष खाकर कोई बच नहीं सकता। इन नियमों का कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। मनुष्य को जो जीवन प्राप्त है वह ईश्वर का दिया हुआ है, इसलिये उसे ईश्वर के बताये अनुसार जीवन जीने में सुख मिलता है और विपरीत चलने में दु:ख होगा। इसी प्रकार व्यावहारिक जीवन में भी देखते हैं कि जिन संस्थाओं में रहते हैं, उन संस्थाओं के नियमों का पालन करने पर वहाँ रह सकते हैं, अन्यथा नहीं। जो नागरिक देश के कानून का उल्लंघन करते हैं, उन्हें दण्ड भोगना पड़ता है। वेद वाणी कहती है कि ईश्वरीय उपदेश को विद्वान् और साधारण व्यक्ति-दोनों ही सुनते हैं, समझते हैं, उसके अस्तित्व का अनुभव बहुत कम जानने वाले और बहुत जानने वाले सभी मनुष्य करते हैं। अत्यन्त मूर्ख व्यक्ति और बहुत विद्वान् व्यक्ति भी अपने रोग आदि एवं अन्य संकट की घड़ी में परमेश्वर को याद करते हैं। बालक, युवा, वृद्ध सभी अपने जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान ईश्वर से चाहते हैं। संसार का प्रत्येक मनुष्य बिना सिखाये परमेश्वर को याद करता है, चाहे वह किसी सम्प्रदाय का हो, नाम चाहे जो भी ले, क्योंकि वह परमेश्वर सर्वव्यापक होने के कारण हम सब के अत्यन्त निकट है, इसलिए सभी अपने छोटे-बड़े दु:खों और समस्याओं को दूर करने के लिए उसी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। जो ईश्वर की उपासना करता है और वह ईश्वर जिसको ठीक समझता है उसे ऋषि, ब्रह्मा, उत्कृष्ट मेधावी बना देता है। यह संसार ईश्वर का ही बनाया हुआ है और सब सामर्थ्य तथा ज्ञान ईश्वर का ही है, इसलिए जो उसके बताये रास्ते पर नहीं चलता, उसे वह नष्ट कर देता है। इस संसार में जो भी अपनी बुद्धि और स्वतंत्रता का उचित उपयोग करता है, वह सुख प्राप्त करता है। जो इन साधनों का दुरुपयोग करता है, वह दु:ख प्राप्त करता है। वेदवाणी स्वयं यह कहती है कि जो ज्ञान से द्वेष करता है, अर्थात् वेद शास्त्रों की निंदा तथा अपमान करके विरुद्ध आचरण करता है, उसे मैं अस्त्र-शस्त्र से नष्ट कर देती हूँ। वेद के जानने वाले ब्राह्मण की रक्षा के लिए संग्राम करती हूँ। मैं द्यौ और पृथिवी आदि सब लोकों में प्रवेश करके व्याप्त

रहती हूँ। कोई भी अनुचित कार्य करने वाला अज्ञानी शेष नहीं रहता।

प्रात:कालीन सत्संग में **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने स्वस्तिवाचन के मन्त्र 'सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं........ स्वस्तये।।' (यजु. २१।६ तथा ऋ. १०।६३।१०) मन्त्र की चर्चा करते हुए बताया कि सृष्टि के आदि काल में ही परमात्मा ने समुद्री यात्रा के लिए जलयान बनाने की विद्या वेदों के माध्यम से मनुष्यों को प्रदान की। वह जलयान इस प्रकार का हो, जिसमें बड़े-बड़े सुन्दर कक्ष, विस्तृत स्थान, प्रकाश के पूर्ण साधन, सुरक्षा के पर्याप्त उपकरण, समुद्र के बीच में रुकने के साधन, अर्थात् अनेक लंगर आदि, चालक दल में कुशल चालक, समुद्री डाकुओं से रक्षा करने के लिए रक्षक योद्धा, चिकित्सक, भोजन, दवाइयाँ आदि हों। वह जहाज निर्माण सम्बन्धी दोषों से रहित, जल में शीघ्र नष्ट न होने वाला, छिद्ररहित, अखंडित और बहुत सुन्दर हो। वह जलयान मनुष्यों के लिए कल्याणकारी हो। उससे वे देश-देशान्तर और द्वीप-द्वीपान्तर में आ जा सकें। परमात्मा शिल्पियों (इंजीनियरों) को उपदेश करता है कि उस जलयान में ऐसे कलायन्त्र भी लगाओ, जिससे नाव जल के प्रवाह और उससे विपरीत दिशा में भी चल सके, जिससे मनुष्य व्यापार करके धनवान हो सके। राजा तथा प्रजा उससे यात्रा करके अपना ज्ञान और आनन्द बढ़ा सके। पौराणिक लोग समुद्री यात्रा करना पाप मानते थे। महर्षि दयानन्द जी ने युक्ति और प्रमाण से सिद्ध किया कि प्राचीन काल में हमारे सब पूर्वज और ऋषि-महर्षि समुद्र के आर-पार यात्रा में आते-जाते थे। स्वामी जी ने यह भी प्रयास किया कि भारत के युवक विदेशों में जाकर अनेक प्रकार की तकनीकी ज्ञान प्राप्त करें और कला-कौशल सीखें।

इतिहास की चर्चा करते हुए आपने बताया कि हमारे देश के इतिहास को विदेशी शासकों ने दूषित करवाया। इतिहास को लिखने वाले दो प्रकार के होते हैं, एक-स्वतन्त्र लेखक, दूसरे-सरकारी वेतनभोगी लेखक। वेतनभोगी लेखक जैसा सरकार का निर्देश हो, वैसा ही लिखते हैं। मुगलकाल और अंग्रेजी शासनकाल के अधिकांश लेखक वेतन लेकर इतिहास को दूषित करते रहे और हमारे देश के शूरवीर राजा-महाराजाओं के चरित्र को बिगाड़ते रहे। इस देश के लोगों को आपस में लड़वाने के लिए उत्तर भारत के आर्य लोगों को बाहर से आने वाला लिखा तथा दक्षिण भारत के लोगों को द्रविड़ कहकर यहाँ का मूल निवासी बताया। स्वतन्त्र लेखक युक्ति और प्रमाणों से घटनाओं का सत्य वर्णन करते हैं। स्वामी दयानन्द जी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में चक्रवर्ती राजाओं के नाम देकर प्रमाणित किया कि आर्य यहाँ के मूल निवासी थे, कहीं बाहर से नहीं आए। उनके बाद स्वतन्त्र लेखकों में पं. भगवद्दत्तजी ने भारतवर्ष का बृहद् इतिहास नामक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में उन्होंने इतिहास में होने वाली विकृतियों का भी स्पष्टीकरण किया है। उन्होंने बताया कि विदेशियों द्वारा भारत का इतिहास, इतिहास को दूषित करने के लिए ही लिखा गया। इसमें उन्होंने आर्यों के शासन और प्रमुख शासकों के जीवन की घटनाओं का विस्तार से उल्लेख किया है। पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति एवं अन्य विद्वानों ने भी स्वतन्त्र रूप से भारत का इतिहास लिखा है, जिसमें सभी घटनाओं का क्रम से प्रमाणिक व्याख्यान है।

प्रात:कालीन सत्संग में ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के इकसठवें सूक्त के छठे मंत्र की व्याख्या करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि वेदों में जहाँ आत्मा, परमात्मा, विज्ञान आदि विषयों की गंभीर बातें हैं, वहीं दैनिक व्यवहार के सम्बन्ध में भी अनेक उपदेश हैं। इस मंत्र में प्रात:काल का महत्त्व और उस समय के लिए मनुष्यों के कर्त्तव्यों के बारे में बताया गया है। रात्रि के चौथे प्रहर लगभग तीन से छ: बजे का समय अत्यन्त मूल्यवान होता है। इसी समय हमारे शरीर और मन में नई चेतना, ऊर्जा, उत्साह का संचार होता है, स्वास्थ्य और आयु में वृद्धि होती है, मस्तिष्क में स्मरण शक्ति बढ़ती है। वायु स्वास्थ्यवर्धक और वातावरण शांत होता है। उगते हुए सूर्य का प्रकाश आँखों को तृप्त करने वाला होता है। दिन-रात के २४ घंटों में यह प्रात:कालीन ब्रह्ममुहूर्त, संध्या अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना के लिए सर्वोत्तम है। ईश्वर की उपासना, अर्थात् निकटता प्राप्त करने के लिए स्तुति, प्रार्थना आवश्यक है, क्योंकि जिसके गुण, कर्म, स्वभाव हम नहीं जानते, उससे प्रीति नहीं होती, इसलिए ईश्वर की स्तुति अर्थात् गुणों का चिन्तन अवश्य करना चाहिए। ईश्वर की उपासना शरीर से नहीं, मन से होती है। वह विद्या, बल, न्याय, दया, विज्ञान, आनन्द आदि गुणों का भण्डार है। परमात्मा परम ऐश्वर्यवान् है, वही हमें सब ऐश्वर्य देता है जो हम चाहते हैं। प्रार्थना करने से अहंकार नष्ट होता है और अपने से श्रेष्ठ के प्रति हमारे मन में सम्मान का भाव उठता है। केवल प्रार्थना से ईश्वर हमें कोई पदार्थ नहीं दे सकता, इसलिए प्रार्थना के

साथ-साथ इच्छित पदार्थ की प्राप्ति के लिए उचित पुरुषार्थ भी करना चाहिए। दिन भर के कार्यों की योजना बनाने के लिये यही बहुत अच्छा समय होता है।

सायंकालीन प्रवचन की शृंखला में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि कर्मों को दो भागों में बाँट सकते हैं-सकाम कर्म और निष्काम कर्म। जो कर्म इन्द्रिय सुख के लिए किये जाते हैं, वे सकाम कर्म और ईश्वर की प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर किए जाते हैं, वे निष्काम कर्म कहलाते हैं। लोग चाहते हैं कि देश में साधु-महात्मा हों, जो समाज को सन्मार्ग पर ले चलें, किन्तु अपने बच्चों को उस मार्ग पर चलते हुए नहीं देखना चाहते, क्योंकि साधु बनने के लिए तपस्या करनी पड़ती है। जीवन में शारीरिक स्वास्थ्य अनिवार्य है, चाहे वह सांसारिक मनुष्य हो या ईश्वर उपासक। शारीरिक बल की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। जिसका शरीर ठीक नहीं, वह संसार के सुख प्राप्त नहीं कर सकता और ईश्वर-भक्ति भी नहीं कर सकता। कमजोर व्यक्ति को बलवान हमेशा पीड़ित करता है। अपनी कमजोरी के कारण व्यक्ति को अनेक प्रकार के दुःख सहन करने पड़ते हैं। ईश्वर प्राप्ति और तप करने के लिए भी कष्ट सहन करना पड़ता है। अधिकांश लोग धन कमाने और सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिए कष्ट सहन करते हैं। साधना में लगे हुए मुनिगण को कष्ट सहन करने का जो श्रेष्ठ फल मिलता है, वह सांसारिक सुख की इच्छा वाले मनुष्यों को नहीं मिल पाता।

सायंकालीन प्रवचन के क्रम में 'उपदेश मंजरी' का पाठ एवं चर्चा करते हुए **आचार्य सत्येन्द्र जी** ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी अत्यन्त सरल शब्दों और कथानकों के द्वारा धर्म-अधर्म की व्याख्या करते थे। वे सत्य बोलने को धर्म और असत्य बोलने को अधर्म मानते थे। सत्य के साथ समझौता करके थोड़े लाभ के लिए झूठ बोलना अधर्म ही है। इसी प्रकार अहिंसा को परम धर्म कहा गया है। धैर्य छोड़ने से धर्म का पालन नहीं होता। शरीर में सामर्थ्य होकर बुरे का प्रतिकार न करना, क्रोध न करना क्षमा है। क्षमा धर्म का ही एक लक्षण है। मन की वृत्तियों का निग्रह करना, अन्याय से धनादि का ग्रहण न करना, शारीरिक और मानसिक शुद्धि रखना, व्यभिचार आदि छोड़कर सभी इन्द्रियों को न्यायपूर्वक वश में रखना, बुद्धि और विद्या को बढ़ाना, पक्षपात छोड़कर न्याय आचरण करना, यज्ञ अर्थात् होम करके अपने और संसार के लिए वायु शुद्ध करना, अध्ययन-अध्यापन करके विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश करना, विद्या और कला कौशल की उन्नति के लिए दान देना और रोगी, अपाहिज, अनाथ लोगों की सहायता करना धर्म है।

रविवारीय सायंकालीन सत्संग में गुरुकुल के **ब्र. सोमशेखर जी** ने वैदिक गणित का महत्त्व बताते हुए कहा कि सभी प्रकार के अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित का उद्गम वेदों से हुआ है। प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों ने गणित के आधार पर अनेक समस्याओं का समाधान किया। वैदिक गणित के कुछ ग्रन्थ आज भी उपलब्ध हैं, जैसे- लीलावती, सूर्यसिद्धान्त, ब्रह्मस्फुटम्, बीजगणितम् आदि। इन पुस्तकों को पढ़कर किसी भी गणितीय समस्या का समाधान शीघ्र किया जा सकता है। गणित संबंधी अनेक प्रकार के खेलों में शतरंज आदि का आविष्कार भारत में ही हुआ है। संसार में जो गणित की विद्या फैली है, वह हमारे पूर्वजों के द्वारा ही प्रचारित की गयी। सामगान, छन्दशास्त्र एवं अन्य शास्त्र वैदिक गणित का प्रतिपादन करते हैं। **पाइथागोरस प्रमेय के नाम से प्रसिद्ध सूत्र को वेदमन्त्रों के आधार पर बोधायन ऋषि ने प्रकाशित किया था।**

* **डॉ. धर्मवीर जी का वेद प्रचार कार्यक्रम :- सम्पन्न कार्यक्रम :- ( क ) ४-५ फरवरी २०१६-** पारिवारिक सत्संग, दिल्ली।

**( ख ) ६-७ फरवरी २०१६-** दयानन्द मठ, रोहतक।

**( ग )१५-२३ फरवरी २०१६-**वेद पारायण यज्ञ, सोनीपत।

**( घ )२६-२८ फरवरी २०१६-**वेद पारायण यज्ञ, गुड़गाँव।

* **आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम :- सम्पन्न कार्यक्रमः- ( क ) २३ जनवरी २०१६-** डी. ए. वी. स्कूल के अध्यापकों के साथ सैद्धान्तिक चर्चा, वैशाली नगर, जयपुर।

**( ख ) २ फरवरी २०१६-** श्री धर्मपाल गुप्ता जी के घर सत्संग, प्रशान्त विहार, दिल्ली।

**( ग ) ३-७ फरवरी २०१६-** ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' ट्रस्ट की ओर से यज्ञ के ब्रह्मा, गाजियाबाद।

**( घ ) २४-२५ फरवरी २०१६-** आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता, कोटपुतली जयपुर।

**( ङ ) २८ फरवरी २०१६-** आर्य बाल भारती स्कूल, पानीपत में सरपंचों को उपदेश।

***आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम- ( क )** निर्भयनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय में यज्ञ, ध्यान, आसन-प्राणायाम शिविर में प्रशिक्षक, बीकानेर।

**( ख ) २२-२८ फरवरी २०१६-** योग-ध्यान प्रशिक्षक शिविर, आर्यसमाज सेक्टर-९, पंचकूला।

# आर्यजगत् के समाचार

**१. गुजरात में कन्या गुरुकुल का शुभारम्भ**- आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट, रोजड़, गुजरात द्वारा संचालित 'आर्यवन आर्ष कन्या गुरुकुल' का शुभारम्भ ८ अप्रैल, २०१६ से होने जा रहा है। प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यता (१) १०वीं कक्षा उत्तीर्ण, (२) संस्कृत व्याकरण तथा दर्शन में रुचि रखने वाली छात्राओं का प्रवेश कार्य अप्रैल २०१६ से आरम्भ हो जाएगा। आर्यवन के सुरम्य व सुरक्षित परिसर में आरम्भ होने वाले इस गुरुकुल में छात्राओं के लिये ट्रस्ट की ओर से भोजन-आवासादि की अपेक्षित सुविधा नि:शुल्क उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र- ०९५०२८६३४९० वेब साईट- *aryavanarshakanyagurukul.org*

**२. वेद प्रचार**- १६ जनवरी से ७ फरवरी २०१६ तक मध्यप्रदेश के तीन जिलों में प्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित नरेशदत्त आर्य बिजनौर, उ.प्र. द्वारा निर्मित्त वेदरथ से प्रचार करवाया गया। ३ जनपदों के कुसली, सुनाचर, श्रीधाम, तिघरा, चरगवां, कमोद, लोन पिपरिया, देवरी, रानी पिन्डरई, नरसिंगपुर, सिंगपुर, दिघेरी, गाडरवाड़ा, राजथरी, बनखेड़ी, पिपरिया, बमूरिया, होशंगाबाद आदि १५ स्थानों में प्रचार हुआ। होशंगाबाद की डोलरिया तहसील के बमूरिया ग्राम में समापन के अवसर पर पंच कुंडीय यज्ञ स्वामी ऋतस्पति द्वारा करवाया गया। उपरोक्त जानकारी आर्य रघुवीरसिंह ने दी।

**३. गीता पर व्याख्यानमाला**- आर्य समाज, निम्बाहेडा के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग में आर्य समाज द्वारा ७ फरवरी २०१६ से गीता पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। आर्य समाज के प्रधान विक्रम आंजना के अनुसार आगामी छ: माह तक हर रविवार को चलने वाला यह कार्यक्रम प्रात: दस बजे आयोजित होगा व इस पर वैदिक विद्वान् व गीता मर्मज्ञ आचार्य कर्मवीर मेधार्थी व्याख्या करेंगे।

**४. वैदिक बाल मेला**- वैदिक वीरांगना दल, मालवीय नगर, जयपुर, राज. द्वारा ६ फरवरी को वैदिक बाल मेले का आयोजन किया गया। इस वैदिक बाल मेले को वैदिक नारे से सजाया गया था। मेले में प्रवेश व खाने-पीने की सभी व्यवस्थाएँ नि:शुल्क रखी गई थीं। इस मेले में बालिकाओं द्वारा हाथ से बनी हुई वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। इस अवसर पर बालिकाओं को राष्ट्रीय ध्वज व रूमाल भेंट किए गए। मेले की संचालिका श्रीमती दुर्गा शर्मा ने बताया कि वेदों में व्यापारिक व्यवसाय के विषय में अनेक मन्त्र हैं और इस मेले का उद्देश्य बालिकाओं में आत्मविश्वास जगाना है। मेले में २५० बालिकाओं ने तथा शहर की ५० गणमान्य महिलाओं ने भाग लिया। इस मेले के अवसर पर दल की राष्ट्रीय अध्यक्षा अनामिका शर्मा ने ग्रीष्म अवकाश में बालिका शिविर लगाने की घोषणा की। यह शिविर २० से २८ मई २०१६ तक लगाया जाएगा। सम्पर्क सूत्र- ०९८२९६६५२३१

**५. वीरांगना शिविर**- सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर २०१६ जम्मू शहर में दि. ५ से १२ जून, २०१६ तक लगाया जाएगा। इसमें १४ वर्ष से अधिक आयु की वीरांगनाएँ आ सकती हैं। दि. १५ मई २०१६ तक अपने नाम देवें। **सम्पर्क- ०९८१०७०२७६०**

**६. अभिनन्दन**- ३० जनवरी २०१६ को स्वतन्त्रता सेनानी एवं महाशय मनूफलसिंह आर्य स्मारक समिति पलवल द्वारा २७वीं प्रेरणा सभा के अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन किया गया। समारोह में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान दिल्ली के निदेशक डॉ. अभिमन्यु कुमार और आर्य समाज के चिन्तक आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र का अभिनन्दन किया गया। इस आयोजन के मुख्य अतिथि सांसद एवं मुम्बई पुलिस के पूर्व आयुक्त डॉ. सत्यपाल सिंह थे।

**७. वर चाहिये**- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, आयु- २२ वर्ष, शिक्षा- शास्त्री, कन्या गुरुकुल वाराणसी में अध्ययनरत युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित युवक चाहिए। सम्पर्क- ०९९३९२०८२८ ई-मेल- krishnakumarsingh183@gmail.com

### शोक समाचार

८. पश्चिम ओड़िशा में वैदिक ज्योति जलाने वाले, गुरुकुल शिक्षा पद्धति एवं वैदिक धर्म ध्वजा के संवाहक, संगीत आदि कलाओं के सच्चे साधक, भावी पीढ़ी के पथप्रदर्शक तथा समाज के सच्चे शिक्षक **श्री शेषदेव नायक आर्य** का स्वर्गवास दि. २२ जनवरी २०१६ को ग्रा. नूँआपाली, जिला बरगड़, ओड़िशा में हुआ। दाह संस्कार आचार्य बृहस्पति एवं स्थानीय विद्वानों के सहयोग से पूर्ण वैदिक विधि विधान से सम्पन्न हुआ। महर्षि दयानन्द व आर्य समाज के प्रति आपकी गहरी निष्ठा थी और इसी मिशन को आगे बढ़ाने में आजीवन लगे रहे। आपके निधन से पश्चिम ओड़िशा के आर्य समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। स्नातक परिषद् व आर्यजनों की ओर से दिवंगत आत्मा को विनम्र श्रद्धांजलि।

९. आर्य समाज टमकोर, जि. झुँझुनू, राज. के कर्मठ कार्यकर्ता श्री शिवकुमार आर्य के छोटे भाई श्री महेन्द्र कुमार आर्य की धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीला देवी** का आकस्मिक निधन दि. २९ जनवरी २०१६ को अहमदाबाद में हो गया।

# हम जिनके ऋणी हैं

## काशी शास्त्रार्थ के समय महर्षि के प्राणों की रक्षा करने वाले

## स्वामी ओमानन्द ( मेवालाल पाण्डे )-पौत्र

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ. २०

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : २९ फरवरी , २०१६ ३९५९/५९

# हम जिनके ऋणी हैं

## काशी शास्त्रार्थ के समय महर्षि के प्राणों की रक्षा करने वाले

## रघुनाथ प्रसाद कोतवाल ( दादा )

सम्बन्धित विवरण पृष्ठ. २०

प्रेषक:

**परोपकारिणी सभा**

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर ( राजस्थान ) ३०५००१